THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180678
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 81.6 S53D

Accession No. GH 2214

Author शास्त्री त्रिलोचन

Title धरती

This book should be returned on or before the date last marked below.

धरती

त्रिलोचन शास्त्री

सर्वाधिकार प्रकाशकके आधीन

प्रकाशक : प्रदीप कार्यालय मुरादाबाद
मुद्रक : प्रदीप प्रेस मुरादाबाद
१९४५

माँ के चरणों में

५६	स्वस्थ मन हो	७६
६०	छाती पर चढ़ा हुआ	८०
६१	आजकल लड़ाई का ज़माना है	८१
६२	भोरई केवट के घर	८२
६३	एकाधिकार के पञ्जे में	८३
६४	इन दिनों मनुष्य का महत्व कोई नहीं है	८४
६५	प्रखर शिशिर की वायु लहराती	८५
६६	प्रिय प्रभात तुम आये आये	८६
६७	सन्ध्या के मौन में	८७
६८	तुम्हें प्रभात पुकार रहा है राही	८८
६९	अगर हारकर विचलित होकर	८९
७०	लौटने का नाम मत लो	९०
७१	मैं सगर्व सोल्लास निरन्तर उन लोगों का गुण गाता हूँ ...	९१
७२	मौत यदि रुकती नहीं तो जन्म भी रुकता कहाँ है ...	९२
७३	तुमने मुझे पुकारा	९३
७४	क्या तुम्हें होगा कभी विश्वास	९४
७५	सन्ध्या बादलों वाली यह आई	९५
७६	नीम में नव-फूल आये	९६
७७	मरण सेज तजकर प्रिय रण में फिर आया	९७
७८	बढ़ अकेला	९८
७९	उजले-उजले बादल आकाश में	९९
८०	मुझे तुम्हारी याद आती	१००
८१	युग गये जो बीत	१०१
८२	हंस के समान दिन उड़कर चला गया	१०२
८३	दिवस की ज्योति हुई सरसों के फूल-सी	१०३
८४	कूक रही है कोयल बार-बार	१०४
८५	भीतर से जितनी साँसें बाहर आती हैं	१०५
८६	घर बाहर देश में विदेश में	१०६
८७	उठ किसान ओ	१०७
८८	आज मेरे प्राण का स्वर	१०९

धरती

मुझे जगत जीवन का प्रेमी
बना रहा है प्यार तुम्हारा

(१)

मेरी दुर्बलता को हरकर
नयी शक्ति नव साहस भरकर
तुमने फिर उत्साह दिलाया
कर्म - क्षेत्र में बढ़ूँ सँभल कर

तब से मैं अविरत बढ़ता हूँ
बल देता है प्यार तुम्हारा

(२)

मुझमें जीवन की लय जागी
मैं धरती का हूँ अनुरागी
जड़ीभूत करती थी मुझको
वह सम्पूर्ण निराशा त्यागी

मैं निर्भय संघर्ष - निरत हो
बदल रहा संसार तुम्हारा

(३)

सुनता हूँ मैं जीवन का स्वर
गाता हूँ मैं जीवन का स्वर
विपुल कण्ठ हर्षाकुल गाते
अमर रहेगा जीवन का स्वर

मैं युग जीवन का अनुयायी
मुझको प्रेरक प्यार तुम्हारा

(४)

हैं असंख्य कर, पद सहकारी
अतुलनीय है यह तैयारी
सभी कार्य पलभर में होते
यह सामाजिक विजय हमारी

आज हमारी इच्छाओं से
रचा गया संसार तुम्हारा

(५)

शेष नहीं है तम दुखदायी
ज्ञान ज्योति नव भू पर छायी
आज सङ्गठित बल ने मिलकर
सुन्दर नयी सृष्टि उपजायी

सोच रहा हूँ बल देता है
कितना कितना प्यार तुम्हारा

(६)

नहीं विश्व से हैं हम बाहर
विश्व हमारे भीतर - बाहर
जग की भावी रूप - योजना
हम पर तुम पर सब पर निर्भर

विश्व बदलने का नूतन क्रम
कार्य, लगन, संस्कार हमारा

(७)

हम तुम इसी जगत् के प्राणी
इसी जगत् ने दी है वाणी
इसको नव - निर्मित करने में
हों हम - तुम सक्रिय कल्याणी

तन - मन में बँधकर रहने में
अब न रहा उपकार हमारा

(८)

सूर्य, चन्द्र, घन, पवन, गगन में
रहते हैं तल्लीन लगन में
इनसे शोभा, श्री, नव जीवन
विकसित भूतल पर क्षण क्षण में

कितने अर्थहीन हम होंगे
यदि न सजग संस्कार हमारा

(९)

वन, पर्वत पर, सागरतल पर
व्योम विजन में महिमा - निर्भर
अपना चरण - चिह्न हम छोड़ें
अजर अमर गति - प्रेरक द्युतिधर

भावी मानव जिससे माने
हो सशक्त आभार हमारा

(१०)

लहरों का क्षण - कालिक जीवन
किन्तु अमिट है उनकी कम्पन
हम भी अपने क्रिया - कम्प से
दें प्रोत्साहन दें नव जीवन

जिससे आगामी जन सोचें
यों विकास - इतिहास हमारा

(११)

शक्ति प्रकृति की अति विस्तृत है
और अभी तक वह अविजित है
अधिकृत कर के सेवा लेना
सामाजिक उससे समुचित है

यही हमारी मानवता की
उन्नति - क्रम का एक सहारा

◆

सोच-समझ कर चलना होगा
अगति नहीं लक्षण जीवन का

(१)

परिवर्तन होते रहते हैं
उन्हें न रोक सका है कोई
परिवर्तन की शक्ति अतुल है
उसे न बाँध सका है कोई
तुम परिवर्तन की गति समझो
तुम परिवर्तन को पहचानो
तुम परिवर्तन को अपनाकर
विश्व बना लो अपने मन का

(२)

अब तक जो होता आया है
उसमें जन - सम्मान नहीं है
उसमें मानव को मानव के
सुख - दुख का कुछ ध्यान नहीं है
उससे व्यक्तिवाद पनपा है
उससे पूँजीवाद हुआ है
इन्हें नष्ट कर शोषित मानव,
शाप काट दो जग - जीवन का

(३)

अब कुछ ऐसी हवा चली है
जिससे सुप्त जगत् जागा है
जिससे कम्पित जीर्ण जगत् ने
आज मरण का वर माँगा है
उनको बहुत जल्द दफ़नाओ
नवयुग के जन आगे आओ
नव निर्माण करो तुम जग का,
जीवन का, समाज का, मन का

(४)

यह संक्रान्ति काल आया है
हम इसका कुछ लाभ उठाएँ
आज पुरानी निर्बलता की
जगह शक्ति नूतन बैठाएँ

आँख खोल, बनकर तटस्थ,
निष्क्रिय दर्शन का समय नहीं है
आज हमारी एक एक गति पर
निर्भर भविष्य जीवन का

(५)

बिगुल बजाओ और बढ़ चलो
यह सम्मुख मैदान पड़ा है
मानवता के मुक्ति - दूत तुम
कौन तुम्हारे साथ अड़ा है

यह संघर्ष - काल आया है
आर्यो जय - यात्रा की बेला
तुम नूतन समाज के स्रष्टा
पगध्वनि में गर्जन जीवन का

(६)

जीवित मानव - महिमा तुम से
तुम मानव - जीवन के धर्त्ता
तुम मानव - जीवन के कर्त्ता
तुम मानव - जीवन के हर्त्ता

विपुल शक्तियों के निधान तुम
अपमानित जीते धरती पर
अपना शक्ति - प्रकाश दिखा दो
क्षय कर अत्याचार अनय का

श्रमिक, कृषक भोगो वह अमृत
जो फल है जीवन - मन्थन का

♦

तुम बढ़ो विजय के पथ पर
नव तेज ओज धृति गति धर

(१)

मैं गान विजय के गाऊँ
जन जन की शक्ति जगाऊँ

तुम महाप्राण सङ्गठित शक्ति
तुम जग-जीवन की अभिव्यक्ति

तुम कर्म-निष्ठ
तुम ध्येय-निष्ठ
तुम धैर्य-निष्ठ

प्रति प्रति पग-ध्वनि पर नव जीवन का गर्जन
प्रति प्रति ललकारों में अभिनव भव-सर्जन

तुम बढ़ो बढ़ो धुन-तत्पर
फहरा रक्त-ध्वज अम्बर
मैं गान विजय के गाऊँ
जन-जन की शक्ति जगाऊँ

(२)

तुम बढ़ो जिस तरह दीप्त ज्वाल
कर दग्ध रूढ़ि का अन्तराल

साम्राज्यवाद
सामन्तवाद
औ' व्यक्तिवाद

जो बाँध रहे गति जीवन की कर उन्हें नष्ट
तुम सामाजिक स्वातंत्र्य-साम्य को करो स्पष्ट

होवें स्वतंत्र नारी-नर
हो सामञ्जस्य अमलतर
मैं गान विजय के गाऊँ
जन-जन की शक्ति जगाऊँ

(३)

तुम करो नष्ट सब भेद-भाव
तुम हरो निखिल जग के अभाव

सब बाधा हर
होकर तत्पर
नव साहस भर

तुम विजयी बनकर अपना नियमन आप करो
जीवन की सञ्चित व्याकुलता सब ताप हरो

जग-जीवन तुम पर निर्भर
तुम अपने बल पर निर्भर
मैं गान विजय के गाऊँ
जन-जन की शक्ति जगाऊँ

◆

मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(१)

आये न बहुत दिन बादल
होता नित घाम भयङ्कर
हरियाली रही न निर्मल
औ' लगी फसल मुरझाने

आखिर अपने बल लेकर
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(२)

है धूप कठिन सिर - ऊपर
थम गयी हवा है जैसे
दोनों दूबों के ऊपर
रख पैर खींचते पानी

उस मलिन हरी धरती पर
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(३)

है अचल पवन, साँसें चल
चल रहा पसीना अविरल
चलती है बेड़ी प्रतिपल
विश्राम नहीं है उनको

है आज नहीं उनको कल
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(४)

बहती छोटी सी नाली
तेज़ी से, लहरोंवाली
है उसकी चाल निराली
देती बढ़ती, नव जीवन

भरती नूतन हरियाली
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(५)

उजले कपसीले बादल
फिरते नभ में दल के दल
बढ़ रही तपन है पल पल
वे जब - तब करते छाया

देते श्रम को नूतन बल
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(६)

हल्की पुरवैया आती
श्रम - जल उनका हर जाती
विकसित कर उनकी छाती
वे और अधिक श्रम करते

उनकी उमङ्ग बढ़ जाती
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(७)

कुछ पंछी उड़कर आते
उड़ते - उड़ते बढ़ जाते
उन कानों में भर जाते
सर्राटा या स्वर अपना

वे अथक सींचते जाते
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(८)

जब तब वे बातें करते ,
साँसों को संयत रखते
अविराम काम ही करते
पल दो पल नयन मिलाते
बल की परिभाषा करते
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(९)

वे सींच रहे जग - जीवन
जग - हित में उनका तन - मन
वे फिर भी निर्बल निर्धन
विश्वास न उनको अपना
वे अपने - पन से उन्मन
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(१०)

बीता है एक पहर भर
श्रम करते रहे बराबर
वे श्रम - जीवन पर निर्भर
यह उनका प्यार अनोखा
है उत्पादक है दृढ़ - तर
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(११)

विश्राम ज़रा करने को
आराम ज़रा करने को
नव कर्म - शक्ति भरने को
आये हैं तरु छाया में
अपनी थकान हरने को
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

◆

बह रही वायु सर्-सर् सर्-सर्
बरसते मेघ झर्-झर् झर्-झर्
काँपते पत्र थर्-थर् थर्-थर्

(१)

लो, आज सजा है आसमान
धरती पर जीवन भासमान
लघु-लघु धाराएँ धावमान
ऊर्मिल, द्रुततर, मनहर, सुन्दर

(२)

बहु वर्णधरा बहु रूपधरा
हो गई नवल जन-मनोहरा
यह परम पुरातन वसुन्धरा
गतिशील पवन ज्यों जीवन-स्वर

(३)

हो गया चित्र-पट पूर्ण गगन
छवि-रूप-वर्ण-मय चंचल घन
पल में कुछ पल में कुछ बन-बन
क्षण-क्षण में प्रियतर, सुन्दरतर

(४)

लो, उठे भूमि से हरितांकुर
शोभित है ग्राम-ग्राम पुर पुर
हो आया शीतल मानव-उर
नव सृष्टि करेगा हो तत्पर

(५)

पाकर पावस का पावन क्षण
करती स्वरूप का परिवर्तन
तन से मन से बनती नूतन
यह प्रकृति सदा नव-जीवनधर

◆

अब तो जन-जन के मन-मन में
अपना गौरव छाया है

(१)

अपने बल का बोध हुआ है
तोड़ रहे सारे बन्धन
करते हैं स्वतन्त्र तन मन
उर में भरे सतेज लगन
करते नव जीवन-अङ्कन
आज बढ़ा है उनका मन
समझ गये वे अपनापन
समझ गये जग का जीवन
आज शक्ति सबकी जागी है
नया पंथ जो पाया है
अब तो जन-जन के मन-मन में
अपना गौरव छाया है

(२)

जन-समाज आगे बढ़ता है
नयी सृष्टि की धुन लेकर
बढ़ने का साहस लेकर
और विजयकी धृति लेकर
अकुतोभय बाधा-निधितर
जग-जीवन-नौका खेकर
जन-जन को ममता देकर
जन-जनको नवबल देकर
सबने आज मिला स्वर अपना
गीत साम्य का गाया है
अब तो जन-जन के मन-मन में
अपना गौरव छाया है

(३)

आज नहीं अपमानित जीवन
आज सुखी सब नर-नारी
शेष नहीं वह लाचारी
मनुज-शक्ति की तैयारी
नहीं मनुज को भयकारी
प्रकृति विजय की तैयारी
अखिल अजेय शक्ति—सारी
आज मनुज को हितकारी

एक दूसरे को बल देकर
जन-समूह बढ़ आया है
अब तो जन-जन के मन-मन में
अपना गौरव छाया है

(४)

जब मानव-हित का आपस में
शेष विरोध नहीं तिलभर
तर कर विपद-सिन्धु दुस्तर
खोज सत्य जीवन का वर
हुआ मनुष्य आत्म-निर्भर
गा जीवन के गीत अमर
बढ़ता चलता है पथ पर
समझ गया है सत्य प्रखर

सत्य, आज मानव-महिमा को
दुनिया ने अपनाया है
अब तो जन-जन के मन-मन में
अपना गौरव छाया है

◆

तारकों से ज्योति चलकर भूमि तल पर
आ रही है आ रही है आ रही है

(१)

है अँधेरी रात
कल है
ब्याह का दिन
दीपकों से गाँव का एकान्त अमलिन
जागती हैं नारियाँ

आज अपने गीत से वे तारकों को हैं जगातीं
साज शादी के सजातीं

आज सारा गाँव एक - प्राण मिलकर
आज सबका हर्ष जागा है विमल तर
आज जीवन-रागिनी अविराम उठकर और उठकर
छा रही है छा रही है छा रही है

(२)

घर बसेगा
बहू
आयेगी सुघर - तर
घर बना देगी उतरकर देव - मन्दिर
सास मन में सोचती है

वह हमें सुख और सबको शान्ति देगी
वर हृदय में सोचता है

काँपती सुख से कहीं बैठी अकेली
साधती होगी बहू कुछ भाव के स्वर
आज मनसा इन सबों की गीत की पहली कड़ी ही
गा रही है गा रही है गा रही है

(३)

भोर होने में
पहर भर
की कसर है
जायगी बारात अब—यह सुअवसर है
बज रहे बाजे निरन्तर

राह - भर ये जायँगे अविराम बजते
औ' सभी का मन जगाते

जा रही मा पुत्र को देने बिदाई
आज उसकी देह भर में स्फूर्ति छाई
लोग पैदल, पालकी में चल रहे बारात देखो
जा रही है जा रही है जा रही है

(४)

मध्य - युग का
साज
औ' सामान सारा
चाल - ढाल सभी पुरानी वही धारा
मध्य - युग के भाववाही

ये नये युग से अपरिचित औ' सशंकित
ये गये सब दिन सताये

चल रहे प्राचीनता से लौ लगाये
एक अपनी नई ही दुनिया बसाये
आज भी इनको पुरानी बात पहले रूप में ही
भा रही है भा रही है भा रही है

◆

बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्य तरु बढ़ पाया है

(१)

ताप, प्रहार सभी कुछ सहते
बढ़ते हैं जो बढ़नेवाले
अपने क्षेत्र बनाते चलते
हैं अपनी धुन के मतवाले

कौन दूसरे का बल लेकर
खड़ा भूमि पर रह पाया है
बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्य तरु बढ़ पाया है

(२)

सुख होता है श्रम बचता है
शेष नहीं चिन्ता रह जाती
बहुत, पुरातन क्रिया - शक्ति है
अब भी मन को सुखी बनाती

किन्तु पूर्वजों पर ही आश्रित
मानव निर्बल हो आया है
बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्य तरु बढ़ पाया है

(३)

जिसने जीवन को अपनाकर
अखिल सङ्कटों को ललकारा

जिसने जीवन के पल-पल को
किया जागरित और सँवारा

वही समूह बना पुरुषार्थी
जीवन-शक्ति समझ पाया है
बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्य तरु बढ़ पाया है

(४)

बदल गया है काल-कलेवर
बदल गयी जीवन की धारा
आज पुरानी रीति-नीतियाँ
दें न सकेंगी रञ्च सहारा

आँख खोल मानव, दृग मींचे,
देख, कहाँ तक तू आया है ?
बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्य तरु बढ़ पाया है

(५)

कर नूतन निर्माण, दिखा कुछ
तू अपने पौरुष का करतब
पराधीनता विविध तोड़ कर दिखा
नयी गति का उपक्रम अब

बहुत पुरातन की छाया में
मानवता ने दुख पाया है
बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्य तरु बढ़ पाया है

◆

छा गये बादल, छिपे तारे, ढका आकाश
कहाँ शेष प्रकाश ?

(१)

अन्धकार अपार भूपर व्यापमान
अन्धकार अपार छाया आसमान
अन्धकार सशक्त केवल अन्धकार

कहाँ जीवन का विपुल विस्तार—
हास — विलास !
छा गये बादल, छिपे तारे, ढका आकाश
कहाँ शेष प्रकाश ?

(२)

व्यर्थ-दृष्टि अदृष्ट जिससे सृष्टि-साज
हो रही है घन-तिमिर में वृष्टि आज
नवल अंकुर नवल जीवन नव समाज

हो रहा निर्माण, नाश, विकास, ह्रास—
स————हास !
छा गये बादल, छिपे तारे, ढका आकाश
कहाँ शेष प्रकाश ?

(३)

आजका यह तिमिर करता शक्ति-दान
समझने मानव लगा है शक्ति - ज्ञान
स्वत्त्व, जीवन, प्रगति, सामञ्जस्य, मान

हो चला सङ्घर्ष इससे जगत —
का अधिवास !
छा गये बादल, छिपे तारे, ढका आकाश
कहाँ शेष प्रकाश ?

◆

पथ है, तू है, मेरे राही; तेरा चलना बड़ा भला है
अविरल चलना बड़ा भला है

(१)

जिस समाज का तू सपना है
जिस समाज का तू अपना है
मैं भी उस समाज का जन हूँ
उस समाज के साथ-साथ ही—
मुझको भी उत्साह मिला है

(२)

ओ तू नियति बदलने वाला
तू स्वभाव का गढ़ने वाला
तूने जिन नयनों से देखा
उन मज़दूर - किसानों का दल—
शक्ति दिखाने आज चला है

(३)

साम्राज्य - औ' - पूँजीवादी
लिये हुए अपनी बरबादी
ज़ोर - आज़माई करते हैं
आज तोड़ने को उनका मन
उठकर दलित समाज चला है

(४)

तेरी गति में जीवन गतिमय
तेरी मति में मन सङ्गतिमय
तेरी जागरूकता द्युतिमय
तेरी रक्षा की चिन्ता में
जन - जीवन का सुफल फला है

◆

चाँदनी चमकती है गंगा बहती जाती है

(१)

चल रही हवा
धीरे-धीरे
सीरी-सीरी;
उड़ रहे गगन में
झीने - झीने
कजरारे
चञ्चल
बादल !
छिपते - दिपते
जब - तब
तारे
उजवल, झलमल ।
चाँदनी चमकती है गङ्गा बहती जाती है

(२)

ऋतु शरद और—
नवमी तिथि है
है कितनी-कितनी मधुर रात
मन में बस जाती शीतलता
है अभी नहीं जाड़ा कोई
बस ज़रा-ज़रा रोएँ काँपे
तन-मन में भर आया उछाह
हाँ, दिन भी आज अजीब रहा—
रिमझिम-रिमझिम पानी बरसा
फिर खुला गगन

हो गई धूप
दिन भर ऐसा ही रहा तार
कपसीले, ऊदे, लाल और
पीले, मटमैले— दल के दल
आये बादल !
अब रात—
न उतना रङ्ग रहा
काला—हलका या गहरा
या धूँएँ - सा
कुछ उजला - उजला
किसके अतृप्त दृग देखेंगे
चाँदनी चमकती है गङ्गा बहती जाती है

(३)

कुछ सुनती हो,
कुछ गुनती हो—
यह पवन, आज यों बार - बार
खींचता तुम्हारा आँचल है
जैसे जब-तब छोटा देवर ।
तुम से हठ करता है जैसे--
तुम चलो जिधर वे हरे खेत ।
वे हरे खेत—
है याद तुम्हें ?—
मैंने जोता तुमने बोया
धीरे-धीरे अंकुर आये
फिर और बढ़े
हमने तुमने मिलकर सींचा
फैली मनमोहन हरियाली
धरती माता का रूप सजा
उन परम सलोने पौदों को
हम दोनों ने मिल बड़ा किया
जिनको नहलाते हैं बादल

जिनको बहलाती है बयार
वे हरे खेत कैसे होंगे
कैसा होगा इस समय ढङ्ग
होंगे सचेत या सोये - से
वे हरे खेत
चाँदनी चमकती है गङ्गा बहती जाती है

(४)

है सन्नाटा बढ़ रहा
रात भी बीत रही है
सारा आलम सोया है
पशु-पंछी सोये हैं
तो अर्थ-हीन
कुछ अर्थ-पूर्ण
स्वर जग में व्यापे
फिर कौन कहे
दुनिया कब,
क्या-क्या, जीत रही है
तब कौन किसे समझाये
सब खोये-खोये हैं
फिर कौन कहाँ तक जन-जन की
करुणा को नापे
चाँदनी चमकती है गङ्गा बहती जाती है

◆

बरस रहे रस बरस रहे रस
गरज-गरज घन ये

(१)

धारामयी धारा हो आयी
रङ्ग - रङ्ग की ले सुघराई
आयी, सुन्दरता अब आयी
नवल बने सब
नवल बने सब
वन - उपवन
जन
ये

(२)

चमक रही बिजली पल - पल पर
नव जीवन विकसित जल - थल पर
देख रहे बादल पल - पल पर
हरित - भरित जग
हरित - भरित जग
विहसित कन—
कन
ये

(३)

गतिमय जग, गतिमय जग - जीवन
गतिमय जीवन का प्रति छन - छन
गतिमय बादल, बिजली गर्जन
अविरल धारा
अविरल धारा
धरती के
धन
ये

*

दुनिया स्थिर नहीं बदलती है
वह बदल रही है क्षण प्रति-क्षण

(१)

आकाश और यह भूमि और
होता है कण-कण और-और
तन और-और मन और-और
यह परिवर्तन अविराम नवल
होता रहता है क्षण प्रति-क्षण

(२)

रं गी न म नो ह र भू त का ल
उस पर अपना मन डाल-डाल
विह्वल होना तज देश-काल
जीवन-विरोध गति का विरोध
कहता प्रवाह है क्षण प्रति-क्षण

(३)

जीवन के वे सुखमय विराम
जिनमें उलझा मन याम-याम
भूला जिसमें तन धरा धाम
वे गये-गये, वे गये-गये
अन्तर बढ़ता है क्षण प्रति-क्षण

(४)

जीवन का है अविरल प्रवाह
बहु भाव-पूर्ण, अद्भुत, अथाह
बहु रंग, रूप, गति : नई राह
रह संग-संग ले नवल रंग
बढ़ना सुन्दर है क्षण प्रतिक्षण

गंगा बहती है लहराती
लहरोंवाली

◆

(१)

उठती तरंग पर नव तरंग
जैसे उमंग पर नव उमंग
मन बह चलता है संग-संग

दृग में छा जाती है नूतन
तट-हरियाली
गङ्गा बहती है लहराती
लहरोंवाली

(२)

उड़ते हैं नभ में खग, बादल
गतिशील पवन शीतल अविरल
सन्ध्या-वेला कंचन के पल

भूतल-नभतल सब स्वर्ण-प्राय
शोभाशाली
गङ्गा बहती है लहराती
लहरोंवाली

(३)

नावें चलती हैं तने पाल
तट-भूमि हरित, निर्मल, विशाल
कुछ जुते खेत कृषि-अंक-माल

श्रमलीन विपुल मानव समूह

गङ्गा बहती है लहराती
लहरोंवाली

(४)

सुन्दर गङ्गा की धार-धवल
है युग युग से बह रही नवल
मानव है नत सश्रद्ध अचल

इसके प्रवाह की अविरलता
गौरवशाली
गङ्गा बहती है लहराती
लहरोंवाली

◆

पथ पर चलते रहो निरन्तर

◆

पथ पर
चलते रहो निरन्तर

सूनापन हो
या निर्जन हो

पथ पुकारता है
गत - स्वन हो

पथिक,
चरण - ध्वनि से
दो उत्तर

पथ पर
चलते रहो निरन्तर

◆

बस चलता नहीं, तुम्हारी सुधि
आया करती है
बार-बार

◆

नभ में तारे धरती पर तम
तम में दीपों की ज्योति विषम
उसकी सीमा, गतिका संयम
देखा करता हूँ
हार - हार

देखा करता हूँ जग-जीवन
जग-जीवन का संयत नर्तन
नर्तनका लहर-भरा क्षण-क्षण
लहरों से निर्मित
सबल धार

जग के जीवन का हर्ष-शोक
मेरा चंचल मन रोक-रोक
रचता अनेक कल्पना लोक
देखा करता हूँ
बार - बार

तुमसे जो दुर्लभ मिला अमृत
उससे अबतक सक्रिय जीवित
हो गई शक्ति इतनी सञ्चित
जय - पथ पर हूँ मैं
हार - हार

◆

आज सुन स्वर में तुम्हारे

◆

आज सुन स्वर में तुम्हारे
गीत अपने
याद आये याद आये
भूल में जिनको चुका था
वे मधुर सपने

देख-देख भरे नयन में भाव
भाव वे जिनमें न रंच दुराव
या बिलगाव
समझ पाया मधुर-मधुर स्वभाव
खिल रही हो तुम कली-सी
वृन्त पर अपने

देखती हो तुम नया संसार
औ नये संसार का व्यवहार
शिष्टाचार
हो लुटाती और अपना प्यार
रंग में रंगकर जगत फिर
देखता सपने

तुम नदी-सी बहु नगर के पास
नगर-नगर भरा तुम्हारा हास
और विलास
तरुण-युग अनुचर तुम्हारा पास
तुम चपल मैं अचल
सुनता गीत अपने
आज मीठे लग रहे हैं
गीत अपने

◆

संगी रहे आज तारे सारी रात

◆

(१)

उड़ - उड़ आये बादल
औ चले गये
सब चले गये
तारे , तारे केवल
जो नये नये
सब नये नये
मिले देखते मुझको
एक लगन सारी रात

(२)

एक - एक वायु - लहर
गई अधर चूम
गई अधर चूम
उड़े बाल काँपा तन
और गया झूम
और गया झूम
एक ध्यान लिये रहा
एक लगन सारी रात

(३)

होगा जब प्रात नवल
अरुण - वर्ण गात
अरुण - वर्ण गात
मेरी निशि का क्रन्दन
होगा अज्ञात
होगा अज्ञात
किरन - धौत चमकूँगा
कह कर लो गई रात

◆

आया प्रभात

◆

आया प्रभात
फैला प्रकाश

सज गया धरातल अम्बर तल
हो गई दृष्टि की गति अपार

प्रतिदिन क्रम से
सुन्दर क्रम से

जो होता रहता परिवर्तन
जिसमें जीवन का लास - हास
जिसमें भव की द्युति का प्रसार

आया प्रभात
दिन और रात
सौन्दर्य - स्नात

कंचन - वर्षा होती अविरल
तन - मन हो जाता तरल - तरल
सब दृश्य नवल होते पल - पल

ऐसा प्रभात
केवल प्रभात
ऋतुमती धरा
है स्वयंवरा

उसकी छवि का नूतन विकास
नव अलङ्कार अभिनव सुहास
दिग्दिक् व्यापी मंजुल सुवास

देता प्रभात
सुन्दर प्रभात

◆

जब जिस छन मैं हारा

◆

जब जिस छन मैं
हारा, हारा, हारा
मैंने तुम्हें पुकारा

तुम आये
मुसकाये
पूछा—
कमज़ोरी है ?

बोला—नहीं, नहीं है
किसने तुमसे कहा कि मुझको कमज़ोरी है

तुम सुनकर
मुसकाये
मुझको रहे देखते
मुझको मिला सहारा
जब जिस छन मैं
हारा, हारा, हारा
मैंने तुम्हें पुकारा

◆

तुम्हें पुकार रहा है कोई

◆

(१)

अभी तुम्हारी शक्ति शेष है
अभी तुम्हारी साँस शेष है
अभी तुम्हारा कार्य शेष है

मत अलसाओ
मत चुप बैठो

तुम्हें पुकार रहा है कोई

(२)

अभी रक्त रग-रग में चलता
अभी ज्ञान का परिचय मिलता
अभी न मरण - प्रिया निर्बलता

मत अलसाओ
मत चुप बैठो

तुम्हें पुकार रहा है कोई

बढ़रहे चरण
मार्ग पर बढ़ रहे चरण

◆

इधर उधर
जिधर दृष्टि गयी
दृश्य सुन्दरतर
क्षण क्षण पर
जो मन का
कर रहे एकान्त हरण
बढ़ रहे चरण
मार्ग पर बढ़ रहे चरण

बाधाएँ
आती हैं आएँगी
हारने के
रुकने के
कभी नहीं
किन्तु चरण

सम्भव विश्राम नहीं
जब तक जीवन है
रुक जाने का नाम नहीं
विश्राम देने को
आयेगा
कभी मरण
बढ़ रहे चरण
मार्ग पर बढ़ रहे चरण

◆

प्रिये बड़े ही मनोयोग से

◆

(१)

प्रिये बड़े ही मनोयोग से
तुम्हें बनाकर उस शिल्पी ने
दिवस लगाकर रात लगाकर
तन की मन की शक्ति लगाकर
इस सोलहवें मधु सम्वत् तक
और सुधारा और सँवारा

(२)

उस शिल्पी ने बड़ी लगन से
बड़े जतन से बड़े चाव से
बड़ी भक्ति से बड़े भाव से
प्रिये तुम्हें नख शिख तक तिल तिल
अथक उमङ्गों से क्षण-क्षण में
और सुधारा और सँवारा

(३)

तुमको अन्धकार में देखा
फिर दिन के प्रकाश में देखा
बिजली चाँद लहर से उसने
तुमको मिला-मिलाकर देखा
देख-देखकर सोच-सोचकर
और सुधारा और सँवारा

(४)

तुम्हें प्रतिष्ठित किया धरा पर
अञ्चल में इस वसुन्धरा का
निखिल विभव भर सर्वोत्तम कर
सुन्दरता की दीपशिखा-सी
लाकर तुम्हें सजाया जगको
और सुधारा और सँवारा

(५)

स्वर का सार तुम्हारा स्वर कर
वरदानों से भरकर अन्तर
आँखों में बिजली, साँसों में
मधुर गीत, अधरों में मधुस्मिति
बाँहों में चिर विजय बाँधकर
और सुधारा और सँवारा

(६)

तुमने रङ्ग दिया जीवन को
तुमने रूप दिया जीवन को
तुमने भाव दिया जीवन को
अपनी ही विभूतियाँ लेकर
तुमने भी इस जग जीवन को
और सुधारा और सँवारा

◆

एक पहर दिन आया होगा

◆

सरदी के ठिठुरे शरीर के
अङ्ग-अङ्ग को छूकर
सूरज की किरणों ने
बँधी मुट्ठियों को खोला
फिर अङ्ग की सिकुड़न हर कर
और रक्त का सञ्चालन कर
स्वस्थ बनाया

आँख उठायी
देखा, कुहरा कहीं नहीं है
नहीं भाग कर चला गया वह दूर दृष्टि से
क्षितिज शरण में

बीस क़दम पर उन पेड़ों को खड़े निहारा
जो प्रकाश में
सहज समीरण की किरणों से खेल रहे थे
देखा, उनकी श्यामल हरियाली में
हलके धुँएँ की तरह
कुहरा
किरणों से परास्त हो
छिप कर रहने का उद्योग अथक करता था

एसा लगता था कि
सुविस्तृत आसमान का
नीला-नीला रङ्ग छूट कर
पेड़ों के पत्तों-पत्तों में
गिरते-गिरते उलझ गया है

चरखी पेंड़की और किलँहटा
गौरैया, महोख, वनमुर्गी
चारा चुनने दरवाज़े पर
जाने कहाँ-कहाँसे आये
सूर्योदय से ही
चिर परिचित

◆

आज की शाम आयी

◆

आज की शाम आयी
आयी और चली गयी
शाम आयी चली गयी

चारों ओर चिन्ताएँ
चित्र अगणित
सारे रङ्ग खो गये
अँधेरा एक रहा शेष
कैसे कहूँ शक्ति नहीं

क्या-क्या उपहार शाम दे गयी
आज की शाम आयी
आयी और चली गयी

अगर मन खुला होता
नयन खोजते राह
चरण चलते जनपथ पर
हो न सका
बढ़ते अँधेरे में
एकान्त आज डूब गया

दिन की तरङ्ग औ
उमङ्ग सब खो गयी
आज की शाम आयी
आयी और चली गयी

◆

आगये तुम आज ?

◆

आ गये तुम आज ?
इतने दिन बिता कर आज !
आ ओ !!

बहुत दिन मैंने तुम्हारी राह देखी
बहुत दिन मैंने तुम्हारा दिन गिना है
बहुत मुख से प्रेम से चुपचाप मैंने
बहुत दिन तन्मय तुम्हारा गुण सुना है

राह बह, बदली, कहां से कहाँ पहुँची
जहाँ प्रायः मैं प्रतीक्षा किया करता था
दिन गये, आये, गये, आये—अनेक
क्या कहूँ—पावस, शरद, ऋतुराज कितने खोगये

गुण तुम्हारा इस तरह मैंने गुना
कि मैं केवल तुम्हारा गुण रह गया
आज जब मैं मैं नहीं हूँ
आगये तुम आज !
इतने दिन बिताकर आज !!
आओ !!!

◆

चाहे जो समझे यह दुनिया
मैंने तुमको प्यार किया है

◆

चाहे जो समझे यह दुनिया मैंने तुमको प्यार किया है
एक नजर में अपना जीवन-अपना धन उपहार दिया है

कब मैंने दुख को दुख माना कब सुख में मन को भरमाया
अपने आकर्षण में तुमने मुझे पथिक ,तैयार किया है

चलते-चलते देश तुम्हारे क्या-क्या पाया और गँवाया
तुम्हें सुनाऊँगा सब प्यारे सब कुछ तुम पर वार दिया है

दिन जाते रातें आती हैं रंग-रूप बदला करते हैं
परिवर्तन की इन लहरों में मैंने तुम्हें निहार लिया है

मुझे तुम्हारी मुसकानों से जीवन का उत्साह मिला है
ध्यान तुम्हारा नहीं उतरता ममता ने लाचार किया है

तुम्हें न पाया तो क्या पाया, पाया तुम्हें क्या नहीं पाया
तुमको पाकर इस जीवन को प्यारे मैंने प्यार दिया है

आज नहीं कुछ और चाह है आज न कोई और राह है
तुमने पथ पर दिशा दिखाकर चलने का अधिकार दिया है

◆

मैं जब कभी अकेला बिलकुल होजाता हूँ

◆

मैं जब कभी अकेला बिलकुल होजाता हूँ
ध्यान तुम्हारा आता है लय होजाता हूँ
आँखें मूँदे तुम्हें देखता हूँ:

तुम आती हो
पास खड़ी होकर
मुसकाती कहती हो:
कहो कहाँ से आये हो परदेसी
कैसा है घरबार तुम्हारा
तुम्हें खबर है ?

दृश्य बदलता है
कि देखता हूँ फिर
मैं बीमार खाट पर लेटा हूँ मनमारे
सिरहाने बैठी हो तुम माथे पर अपना हाथ पसारे
पूछ रही हो
[दृग में चिन्ता वाणी में विश्वास अटल है]
अब कैसी तबियत है !

आज तुम्हारी याद मुझे आयी है
बहुत दिनों के बाद तुम्हारी याद आज आयी है
एक मित्र हैं
अभी-अभी बस ब्याह हुआ है
अपनी परिणीता का फ़ोटो दिखा रहे थे
दिखा रहे थे, बता रहे थे
आज तुम्हारी याद मुझे आई है
देख गया इतिहास कि जबसे एक सूत्र में हम दोनों हैं

◆

अभी कहाँ मुझे शान्ति मिली ?

•

अभी मेरा मन
रण - क्षेत्र है
जहाँ युद्ध
युद्ध
और ललकार
विजय हार
प्रस्तर-प्राचीर से घिरा सुमन
कहाँ शान्ति मिली
किसी समय

चाहता हूँ
जय
प रा ज य की कल्पना से
हो ता है भ य
चाहता हूँ जय
मुझे अभी रूप की तृषा है
अभी रङ्ग चाहिए
अभी मुझे
आँखों का अर्थ जान पड़ता है
अभी कहाँ मुझे शान्ति मिली

•

कभी कभी सोचा करता हूँ

◆

(१)

कोई काम नहीं कर पाया
कभी किसी के काम न आया
ज ग ती से अन्न - जल - प व न ले ता र ह ता हूँ
क्या मे रा जी व न जी व न है

(२)

पथ पर धूल उड़ा करती है
वह भी आखिर कुछ करती है
प र मैं - मे रे म न, तु म बो लो - क्या कर ता हूँ
क्या मे रा जी व न जी व न है

(३)

और नहीं तो तत्त्व मुक्त हैं
वे विराट् में प्रभा - युक्त हैं
मे रे पाँ चों त त्त्व ल जा ओ मैं म र ता हूँ
क्या मे रा जी व न जी व न है

(४)

बन्धन हो कल्याण के लिए
जीवन हो सम्मान के लिए
मे रे प ञ्च - त त्त्व अ प मा नि त, मैं ध र्ता हूँ
क्या मे रा जी व न जी व न है

◆

उड़ो विहग बाँधे मत रहो पंख

◆

वह निशा चली गई
जो अब तक
रङ्ग रङ्ग के सपने देती रही
उड़ो विहग—

जिन किरणों ने
कोमल स्पर्श से
तुमको अपना प्रिय परिचय दिया
उनको अब अपनालो
उड़ो विहग—

अब प्रकाश ही प्रकाश
भूतल पर नभतल पर
ये प्रकाश की लहरें
उज्वल से उज्वलतर
निरते हैं जड़-चेतन
चर-अचर
उड़ो विहग—

दिवा, यह तुम्हारी
सहधर्मिणी है
लक्ष्मी है
स्वागत कर उसका सम्मान करो
उड़ो विहग—

◆

गोविंद आज तुम नहीं हो

◆

गोविंद,
आज तुम नहीं हो
नहीं हो गोविंद !

चाहता हूँ : होते तुम
कितना अच्छा होता
सङ्ग होता साथ होता
आँखें देखतीं तो तुम्हें
बाँहें बाँधतीं तो तुम्हें
गोविंद !

गोविंद,
आज तुम नहीं हो
कहाँ खोजूँ
कहीं नहीं हो

पता नहीं कहाँ हो
पता नहीं कहाँ हो
पता दोगे अपना ?—
तुम्हें पत्र लिखने की
इच्छा हो आती है बार-बार
कहाँ लिखूँ ?

पता नहीं कहाँ हो
पता दोगे अपना ?

बिना कुछ कहे सुने
अकस्मात्
एक दिन
कहाँ तुम चले गये

तुमको क्या यह भय था
मेरी बाहें बाँध लेतीं
तुम्हें मुक्ति न मिलती
इतना अविश्वास था
फिर भी तुम मुझको विश्वास-पात्र कहते रहे
मेरी अनुपस्थिति में तुम जो यों चल दिये
कुछ अच्छा नहीं किया

भैया,
आज तुम न जाने कहाँ हो

सोचता हूँ
तुमको अचानक मैं कभी कहीं
पकड़ पाता
तो कहता :

देखा;
तुम्हें खोज लिया
खोज लिया और छिपो

किन्तु हाय
व्यर्थ सब विचार व्यर्थ सब उपाय

आ जाते हैं अनन्त अन्तराय
सुनता हूँ वह तुम्हारा रूप दग्ध हो चुका
गङ्गा की तरङ्गें राख भी समेट ले गईं
अब भी तुम हो क्या, कहीं
कहाँ हो ?

आँखें तुम्हें देख अब नहीं पातीं
कान में तुम्हारे स्वर नहीं पड़ते
बाँहें भी तुम्हारी अब न बनती हैं कण्ठहार

किन्तु मन बार बार
तुम्हारा ध्यान करता है
बातें भी होती हैं
प्रसङ्ग सब पुराने वही
किन्तु रस नित्य नया

भैया,
तुम कैसे हो
कहाँ हो
स्वस्थ हो कि नहीं
कभी कभी मेरी भी याद तुम्हें आती है
कहो, कभी मेरी भी याद तुम्हें आती है

राह पागया अब मैं

◆

राह पागया
अब मैं

चलना है
चलता हूँ
दिन हो या रात हो
बाधाएँ
आयें
अच्छा तो है साथ हो
समझ बूझ करके
इस ओर आगया
अब मैं

रा ह पा ग या
अब मैं

चि न्ता क्या
शङ्का क्या
बु रा क्या अ के लापन
चलना है
ग ति ब ल है
तन-गिरि में निर्झर मन
स्वर से सङ्गीत से
सहाय पा गया
अब मैं

रा ह पा गया
अब मैं

◆

आज मैं अकेला हूँ

◆

(१)

आज मैं अकेला हूँ
अकेले रहा नहीं जाता
रहा नहीं जाता

(२)

जीवन मिला है यह
रतन मिला है यह
धूल में
कि
फूल में
मिला है
तो
मिला है यह
मोल-तोल इसका
अकेले कहा नहीं जाता

(३)

सुख आये दुख आये
दिन आये रात आये
फूल में
कि
धूल में

आये

जैसे

जब आये

सुख दुख एक भी

अकेले सहा नहीं जाता

(४)

चरण हैं चलता हूँ

चलता हूँ चलता हूँ

फूल में

कि

धूल में

चलाता

मन

चलता हूँ

ओखी धार दिन की

अकेले बहा नहीं जाता

◆

फूल फूल पर तितली उड़ती

◆

फूल फूल पर तितली उड़ती
फूल फूल रस लेती

दल दल पर चल
मधुर मनोहर
नृत्य नवल कर
बरती परिमल
परिचय-पथ विराम पल-पल के
पल-पल को गति देती

सूर्य-किरण में
पवन सुमन बन
करती नर्तन
मधु विचरण में
लहर लहर से मिली लहर-सी
लहरों को स्वर देती

विचरण क्षण क्षण
पङ्खों पर तन
फूलों पर मन
रञ्जित कण कण
देश देश सन्देश सुमन का

सुमन सुमन को देती

रङ्ग रङ्ग जग
जीवन जगमग
सुरभि-ज्योति-मग
प्रेरित रग-रग
दृग-दृग का उल्लास वरण कर
लास-लहरियाँ लेती

◆

पथपर जगका जीवन

◆

पथपर प्रायः
प्रति पद गतिमें
संसृति सस्वर
शाप और वर
इस जीवन के
चिह्नित पथपर
पथपर रजकण से जन

वर्तमान का
क्षण-क्षण क्रम से
दृग में आता
परिचय होता
जीवन में
निश्चय भर जाता
पथपर मन का गुंजन

◆

बादलों में लग गई है आग दिन की

◆

बढ़ रहीं क्षण-क्षण शिखाएँ
दमकते अब पेड़ - पल्लव
उठ पड़ा देखो विहग-रव
गये सोते जाग
बादलों में लग गई है आग दिन की

पूर्व की चादर गई जल
जो सितारों से छपाई
दिवा आई दिवा आई
कर्म का ले राग
बादलों में लग गई है आग दिन की

जो कमाया जो गँवाया
छोड़ उसका छोड़ सपना
और कर बल प्राण अपना
आज का दिन भाग
बादलों में लग गई है आग दिन की

वास तज कर विचरते पशु
विहग उड़ते पर पसारे
नील नभ में मेघ हारे
भूमि स्वर्ग पराग
बादलों में लग गई है आग दिन की

◆

खिला यह दिन का कमल
सुन्दर सहस्रदल

◆

लहर लहर परिचय पराग - पूर्ण
दृश्य दृश्य अनुरञ्जित ज्योति चूर्ण
दिशा देश
धवल नवल
खिला यह दिन का कमल
सुन्दर सहस्रदल

क्या उमङ्ग जागरण की तरङ्ग
मग्र [illegible] अङ्ग-अङ्ग
तरु के दल
खग कल कल
खिला यह दिन का कमल
सुन्दर सहस्रदल

अन्धकार कारा से दृग छूटे
दृश्य देश विचरण को खुल टूटे
स्वर्णाञ्चल
धरणी कल
खिला यह दिन का कमल
सुन्दर सहस्रदल

विश्व के सरोवर में दिन का कमल
लहराता दृग दृगका लीला कमल
सदा अमल
नित्य नवल
खिला यह दिन का कमल
सुन्दर सहस्रदल

◆

पूर्व क्षितिज में तारा

◆

पेड़ों के पल्लव से ऊपर
उठता धीरे-धीरे ऊपर
अन्धकार-चन्द्रिका-स्नात
तरुओं पर जैसे धारा

रेखा-प्राय धूम्र घर-घर से
नील नील नभ चला नगर से
लहराता तरु ऊपर छाता
उस के ऊपर तारा

कार्तिक मास द्वादशी की तिथि
शुक्ला स्वयमागता यह अतिथि
मेरे मन को प्रिय विशेषतः
चन्द्र प्रभा से प्यारा

दक्षिण पवन धीर पद अविरल
चल किसलय तारक दल निश्चल
गगन चन्द्र चल परिचय बाँधे
चल स्थिर लगती धारा

मन्द प्रकाश तिमिर-अनुरंजित
शीतलता, तन स्थिर चंचल चित
भली धूल भी, गाढ़ा कुहरा
दृश्य परम प्रिय सारा

पूरब से पश्चिम को ढलती
तारक माला यों ही चलती
चाप छिपाकर चिह्न मिटाकर
यह गति-क्रम है न्यारा

◆

गीत बन जाते हृदय के भाव

◆

गीत बन जाते हृदय के भाव
गीत बन जाते

तोड़ बन्धन और बाधा
गीत ये फिर फिर उमँड़ते
उड़ स्वरों के पङ्ख पर फिर
वर्ण भास्वर गगन जाते
गीत बन जाते हृदय के भाव

जब नयन में रूप आता
रङ्ग आता
तब तरङ्गित हंस
मानस छोड़ उड़ते
नील नभ को पार करते
किस दिशा में मगन जाते
गीत बन जाते हृदय के भाव

कौन परिचय कौन सञ्चय
जन्म कैसे किस तरह क्षय
कौन जाने
किन्तु भू के भाव ये
उड़ गगन जाते
गीत बन जाते हृदय के भाव

◆

प्राण-सखा, मनमें रहनेवाले

◆

(१)

नयन स्वप्न-सुमन चयन
करते स्मृति - वन - उपवन
तब तन - मन मधुर - मधुर
श्वास - श्वास बनता सुर
आते तुम नव विकसित
कर में मञ्जुल गुलाब
मृदुल स्पर्श पलकों पर

स्वागत कहनेवाले
मन में रहनेवाले

(२)

देखता हूँ नयन खोल
स्वप्नों से भी सुन्दर
सुन्दरता का निर्झर
बन जाता जीवन-स्वर
स्वप्न छोड़ उड़ता हूँ
नूतन धृति बल लेकर
आशा विश्वास लेकर

प्राण-सखा
मन में रहने वाले

(३)

तुम धीरे-धीरे ले चलते हो कर्मक्षेत्र
कठिन घोर कर्मक्षेत्र

दीप्त तेज कहते हो
साथी, यह कर्म कर

फिर मैं जम जाता हूँ
प्राण - सखा
मन में रहने वाले,

(४)

देख श्रमित प्राण - सखा
आते हो मधुर - मधुर
फिर गुलाब नव लेकर
कहते पलकें छूकर
देख - देख छवि सुन्दर
जा घर विश्राम कर
स्वप्न देख अति सुन्दर

फिर गुलाब स्पर्शों से
हम तुम मिलने वाले
प्राण - सखा
मन में रहने वाले

◆

जीवन का निश्चय क्या

◆

(१)

एक-एक साँस से
जु ड़ा हु आ
एक-एक तार से
बु ना हु आ
कौन जाने कब टूटे
नि श्च य क्या
जीवन का निश्चय क्या

(२)

लहरों पर दीप दान
हो ता है
दीपक कबतक प्रकाश
दे ता है
अक्षय रहता प्रकाश
परिचय क्या
जीवन का निश्चय क्या

(३)

हाथों से छूट
छूट जाता है
तारों से टूट
टूट जाता है
बन्धन, सम्बन्ध कौन
स श्च य क्या
जीवन का निश्चय क्या

◆

मिला निमन्त्रण प्राणों का

◆

(१)

परिचय-प्राप्ति नहीं अब बन्धन
नहीं सरणि विजड़ित अभिनन्दन
शेष नहीं सीमाएँ
टूट गई कारा जीवन की
अब तो स्वतंत्रता जीवित धन

मि ला नि म न्त्र ण प्रा णों का
प्राणों को

(२)

नहीं अ व ज्ञा न य न नयन में
एक कल्पना प्रति जन-मन में
एक भाव की धारा
एक एक का भाव समझता
जीवन जन में नहीं विजन में

मि ला नि म न्त्र ण प्रा णों का
प्राणों को

(३)

खुले मार्ग अब जीवन गतिमय
क्षण-क्षण मृदुल मधुर सङ्गतिमय
गई अपरता सारी
आलिङ्गित जीवन जनपद का
लहर-लहर निर्भर यति-गतिमय

मि ला नि म न्त्र ण प्रा णों का
प्राणों को

◆

दो दिन पाहुन जैसे रहकर बादल चलेगये वे

◆

बना बना कर
चित्र सलोने
यह सूना आकाश सजाया
राग दिखाया
रंग दिखाया
क्षण क्षण छविसे चित्त चुराया
बादल चले गये वे

आसमान अब
नीला नीला
एक रंग रस श्याम सजीला
धरती पीली
हरी रसीली
शिशिर प्रभात समुज्ज्वल गीला
बादल चले गये वे

दो दिन दुख का
दो दिन सुख का
दुख सुख दोनों संगी जग में
कभी हास है
कभी अश्रु है
जीवन नवल तरंगी जग में
बादल चले गये वे
दो दिन पाहुन जैसे रहकर

◆

झीने श्वेत बादल आकाश में

◆

झीने श्वेत बादल आकाश में
दस बजे दिन के प्रकाश में
नीलिमा गगन की झलकाते हुए
इधर उधर लहरों-से फिरते हैं

मन्द मन्द पछुआ हवा बह रही
लहरें उपजाती हुई बह रही
हरे भरे पेड़ों के पत्तों से
गेहूँ जौ मटर और सरसों से
खेलती हुई घर के द्वार पर
आकर मुझको छूकर लहराकर
और कहीं आगे को जाती है

खुले हुए अंगों को सहलाकर
अपनी प्रभा से नव प्रकाश भर
बालिका-सी सरदी की धूप यह
तन मन को ताज़ा कर देती है

नीम बाँस पीपल लहटोरे के
पेड़ हरे निर्मल पत्तों वाले
खड़े खड़े बरसों का प्यार भरे
मुझको अविराम चँवर करते हैं

इतना सा प्यार यह दुलार यह
पाता हूँ प्रतिदिन मैं बिना कहे बिना सुने
किसी का आभार भी बिना माने
पाता हूँ जैसे पुरस्कार यह

◆

पत्ते केवल पतझर आने पर ही नहीं झरा करते हैं

◆

पत्ते केवल पतझर आनेपर ही नहीं झरा करते हैं
जीवनका रस जभी सूख जाता है तभी बिना कुछ झिझके
बिना मूहूर्त्त-प्रतीक्षा के ही झर जाते हैं

इस जीवन का मोल बहुत है मोल कूतना सहज नहीं है
फिर भी इस जीवन का दुनिया में अपमान हुआ करता है
इतना जिसका पार नहीं है

कुछ बरसों के क्षण-भङ्गुर जीवन को सुखी बनाने के ही
लिए लोग औरों के सुख को बल से हरण किया करते हैं
जीवन अमर अगर होता तो पता नहीं फिर क्या क्या होता
क्या क्या गुल खिलते दुनिया में

ऐसा नहीं दिखाई देता कहीं कि लोग प्रसन्न चित्त से
एक दूसरे के दुख को अपना ही जानें अपना मानें
और दुःख को कम करने के लिए समाज समान बनावें
धरती पर ही स्वर्ग बसावें

◆

चीन, महान् चीन

◆

चीन, महान् चीन, मैं तुझको नमस्कार करता हूँ
पराधीन भारतवासी मैं नमस्कार करता हूँ
मेरा नमस्कार क्या तेरा गौरव अपना लेगा
चीन, महान् चीन, मैं तुझको नमस्कार करता हूँ

च्याङ्काई शेक का वह कथन मुझे याद आता है
वीरो, शस्त्र नहीं है तो कुछ बात नहीं है
चिन्ता छोड़ो, यह शरीर ही शत्रु-गनों को अर्पित कर दो
अपने अस्थि-मांस से ही तुम सब बैरी से लड़ते जाओ
मृत्यु तुम्हारी फल लायेगी चीन स्वतंत्र रहेगा भूपर
च्याङ्काई शेक का वह कथन मुझे याद आता है

हुई हार पर हार लड़ाई रुकी नहीं पर कभी किसी दिन
पाँच साल गत हुए साल के गिने तीनसौ पैंसठ के दिन
मगर चीनके नौजवान जिनको मरनेका स्वाद मिलगया
लड़ते-मरते चले जारहे कभी उन्होंने गिने नहीं दिन

स्वतन्त्रता का मोल प्राण है प्राण चढ़ाने पर मिलती है
सहज नहीं है यह स्वतन्त्रता नहीं हाट में यह मिलती है
ताक़त हो उत्साह हो बढ़ो स्वतन्त्रता कुछ दूर नहीं है
स्वतंत्रता या मौत नहीं तो दोनों साथ साथ मिलती है

◆

सहज सुन्दर मन्द तारों का पुनीत प्रकाश

◆

सहज सुन्दर मन्द तारों का पुनीत प्रकाश
आज सारी रात निर्मल देसका आकाश

रात काली होगई थी चौथ का था चाँद
बन गये थे व्योम में तारे प्रभा की याद

तारकों की ज्योति में थी रात्रि दृश्य विशेष
कालिमा सब विश्व की थी परिव्याप्त अशेष

पूर्व में समुदित प्रतीची क्षितिज में अविराम
गमनशील पहुँच वहाँ करने गये विश्राम

गाँव का आकाश निर्मल धूम्रहीन अतीव
तारकों को कर रहा था ज्योतिपूर्ण सजीव

किरण उनकी मिल नयन से कर रही थी बात
बात वह सुनती खिसकती जा रही थी रात

पेड़ इमली का खड़ा था मौन दीर्घाकार
पत्र शाखा गुप्त सब था बस प्रकट आकार

अन्तराल तिमिर-प्रपूरित भेद कर दो एक
तरल तारे कर रहे थे किरण से अभिषेक

मौन इतना था चहुँ ओर अपरम्पार
हृदय-धड़कन कान सुनते सजग बारम्बार

उस अभेद्य तमिस्र में ये नयन थे निरुपाय
तारकों से माँगते थे ज्योति अति असहाय

रात सारी रात आँखों में गई कट रात
जाग कर झेले विचारों के विपुल आघात

ध्यान सबका स्वप्न सबका स्वस्थ हो था मौन
तिमिर बारम्बार जैसे पूछता था कौन

◆

झीने श्वेत बादल आकाश में

◆

झीने श्वेत बादल आकाश में
दस बजे दिन के प्रकाश में
नीलिमा गगन की झलकाते हुए
इधर उधर लहरों-से फिरते हैं

मन्द मन्द पछुआ हवा बह रही
लहरें उपजाती हुई बह रही
हरे भरे पेड़ों के पत्तों से
गेहूँ जौ मटर और सरसों से
खेलती हुई घर के द्वार पर
आकर मुझको छूकर लहराकर
और कहीं आगे को जाती है

खुले हुए अंगों को सहलाकर
अपनी प्रभा से नव प्रकाश भर
बालिका-सी सरदी की धूप यह
तन मन को ताज़ा कर देती है

नीम बाँस पीपल लहटोरे के
पेड़ हरे निर्मल पत्तों वाले
खड़े खड़े बरसों का प्यार भरे
मुझको अविराम चँवर करते हैं

इतना सा प्यार यह दुलार यह
पाता हूँ प्रतिदिन मैं बिना कहे बिना सुने
किसी का आभार भी बिना माने
पाता हूँ जैसे पुरस्कार यह

◆

पत्ते केवल पतझर आने पर ही नहीं झरा करते हैं

◆

पत्ते केवल पतझर आनेपर ही नहीं झरा करते हैं
जीवनका रस जभी सूख जाता है तभी बिना कुछ झिझके
बिना मूहूर्त्त-प्रतीक्षा के ही झर जाते हैं

इस जीवन का मोल बहुत है मोल कूतना सहज नहीं है
फिर भी इस जीवन का दुनिया में अपमान हुआ करता है
इतना जिसका पार नहीं है

कुछ बरसों के क्षण-भङ्गुर जीवन को सुखी बनाने के ही
लिए लोग औरों के सुख को बल से हरण किया करते हैं
जीवन अमर अगर होता तो पता नहीं फिर क्या क्या होता
क्या क्या गुल खिलते दुनिया में

ऐसा नहीं दिखाई देता कहीं कि लोग प्रसन्न चित्त से
एक दूसरे के दुख को अपना ही जानें अपना मानें
और दुःख को कम करने के लिए समाज समान बनावें
धरती पर ही स्वर्ग बसावें

◆

चीन, महान् चीन

◆

चीन, महान् चीन, मैं तुझको नमस्कार करता हूँ
पराधीन भारतवासी मैं नमस्कार करता हूँ
मेरा नमस्कार क्या तेरा गौरव अपना लेगा
चीन, महान् चीन, मैं तुझको नमस्कार करता हूँ

च्याङ्काई शेक का वह कथन मुझे याद आता है
वीरो, शस्त्र नहीं है तो कुछ बात नहीं है
चिन्ता छोड़ो, यह शरीर ही शत्रु-गनों को अर्पित कर दो
अपने अस्थि-मांस से ही तुम सब बैरी से लड़ते जाओ
मृत्यु तुम्हारी फल लायेगी चीन स्वतंत्र रहेगा भूपर
च्याङ्काई शेक का वह कथन मुझे याद आता है

हुई हार पर हार लड़ाई रुकी नहीं पर कभी किसी दिन
पाँच साल गत हुए साल के गिने तीनसौ पैंसठ के दिन
मगर चीनके नौजवान जिनको मरनेका स्वाद मिलगया
लड़ते-मरते चले जारहे कभी उन्होंने गिने नहीं दिन

स्वतन्त्रता का मोल प्राण है प्राण चढ़ाने पर मिलती है
सहज नहीं है यह स्वतन्त्रता नहीं हाट में यह मिलती है
ताक़त हो उत्साह हो बढ़ो स्वतन्त्रता कुछ दूर नहीं है
स्वतंत्रता या मौत नहीं तो दोनों साथ साथ मिलती है

◆

सहज सुन्दर मन्द तारों का पुनीत प्रकाश

◆

सहज सुन्दर मन्द तारों का पुनीत प्रकाश
आज सारी रात निर्मल देसका आकाश

रात काली होगई थी चौथ का था चाँद
बन गये थे व्योम में तारे प्रभा की याद

तारकों की ज्योति में थी रात्रि दृश्य विशेष
कालिमा सब विश्व की थी परिव्याप्त अशेष

पूर्व में समुदित प्रतीची क्षितिज में अविराम
गमनशील पहुँच वहाँ करने गये विश्राम

गाँव का आकाश निर्मल धूम्रहीन अतीव
तारकों को कर रहा था ज्योतिपूर्ण सजीव

किरण उनकी मिल नयन से कर रही थी बात
बात वह सुनती खिसकती जा रही थी रात

पेड़ इमली का खड़ा था मौन दीर्घाकार
पत्र शाखा गुप्त सब था बस प्रकट आकार

अन्तराल तिमिर-प्रपूरित भेद कर दो एक
तरल तारे कर रहे थे किरण से अभिषेक

मौन इतना था चहुँ ओर अपरम्पार
हृदय-धड़कन कान सुनते सजग बारम्बार

उस अभेद्य तमिस्र में ये नयन थे निरुपाय
तारकों से माँगते थे ज्योति अति असहाय

रात सारी रात आँखों में गई कट रात
जाग कर झेले विचारों के विपुल आघात

ध्यान सबका स्वप्न सबका स्वस्थ हो था मौन
तिमिर बारम्बार जैसे पूछता था कौन

◆

सघन अँधेरी रात

◆

नयन खुले बेकार
सहन करने को तिमिर-प्रहार
सम्मुख सुन्दर अतिथि
स्वप्न आये जब करने बात
प्रेम से आये करने बात

कुछ भी दृष्टि न आता
दृग खुलते तम-रज भर जाता
स्नेह सहानुभूति से
तारे कर से छूते गात
प्रेममय कर से छूते गात

इस तम से क्या आशा
शयन स्वप्न बल की परिभाषा
बँधन बल हर लेता
निर्बल को देता आघात
निरुत्तर असहनीय आघात

दुष्कर समर नियति का
चलता बल न जहाँ गति-मति का
श्वास समय सहचर हैं
जिसके अनुचर उसका प्रात
चिह्न अनिच्छित उसे
नहीं दे सकनी रे यह रात
सघन अँधेरी रात

◆

आज का दिन बादलों में खोगया था

◆

आज का दिन बादलों में खो गया था
दृष्टि में आकर शशक जैसे
चपल से चपल होकर
सघन पत्र-श्याम वन में खो गया था

वायु भूपर और ऊपर
नवल लहराते हुए घन श्याम सुन्दर
कहीं धौरे कहीं कारे
लहर तिल तिल पर सँवारे
मधुर मधुर सजीव गर्जन से
ध्वनित जग हो गया था

पङ्क हो पथ अङ्क में रज कण मिले कल
आज सूखे मार्ग निर्मल
सतत आग्रहशील आकर
पवन शीतल स्पर्श कर कर
अ ब अ व ज्ञा पात्र
अति परिचय-जनित वह हो गया था

दूर से, मेरे क्षितिज के पार, पश्चिम में कहीं से
सतत वर्षण-शील जलदों को चला कर
मधुर गर्जन-शील कर बिजली जगा कर
पथ-जनित निज शुष्कता
घन-सीकरों के स्पर्श हर
उच्छ्वसित पछुवा हवा तरु, शस्य और सरोवरों को
अनवरत गति की कहानी साँस-सी लेकर सुना कर
मधुर सञ्चित स्नेह-सी करती समर्पण मौन अपना

आज मेरे पास आयी
आगया मन
जो स्मरण में प्रिय प्रवासी होगया था

◆

संग पवन के चाल पवन की
आऊँ मैं लहराता आऊँ

◆

प्रिय, मैं जलधर-सा धरती को
दुखी देखकर तप्त देखकर
शीतल छाया बन छा जाऊँ

उसका रूखा - सूखा आँचल
हराभरा कर देने के हित
गल गल जाऊँ मिट मिट जाऊँ

उमँड़ घुमँड़ कर औ' घिर घिर कर
कटु अकाल पर और ताप पर
आऊँ गरज गरज कर आऊँ

मेरे आये से सुख आये
मेरे मिटने से सुख आये
आऊँ मैं चिर सुख बन आऊँ

मैं दुखियों की विपति-व्यथा को
दूर करूँ यह जीवन देकर
जीवन के सङ्गीत सुनाऊँ

अञ्जन होकर मोहन होकर
अपना होकर सपना होकर
लोचन लोचन में बस जाऊँ

◆

जीवन का एक लघु प्रसंग

◆

तब मैं बहुत छोटा था
कौन साल कौन मास और कौन दिन था
यह सब कुछ याद नहीं
जानता भी नहीं था
पढ़ता था
नाम और ग्राम लिखना आगया था

स्कूल जाने का समय हो आया था
बहुत व्यग्र बूआ के पास खड़ा खड़ा मैं
उससे किताबें नई लेने के लिए पैसे माँग रहा था

बूआने पूछा : जो किताब अभी ली गई थी उसको क्या पढ़ लिया
मैंने कहा : कब न पढ़ा ! अब तो नई चाहिए, और सब खरीद चुके
दरजे में जितने हैं केवल मैं बाक़ी हूँ
बूआने कहा : अभी वही पढ़ो, फिर पैसे दूँगी, कुछ दिन बीते
ले जाना नई लेना
मैंने कहा : बूआ यह कैसे हो सकता है वह दरजा पास कर चुका हूँ मैं
अब नई लेनी हैं किताबें पुरानी बेकार हैं
बूआने कहा : किसी लड़के से माँग लो ना तुमसे जो आगे पढ़ता रहा हो
वह दर्जा पास कर चुका हों अब जिसमें तुम नये नये आये हो
मैंने चिढ़ करके कहा : बूआ वे किताबें अब बदल गईं
बूआ ने पूछा : क्यों ?
क्या जानूँ—मैंने कहा
अर्द्ध स्वगत बूआ बोलीं—सभी पैसे कमा रहे हैं
मैंने पूछा : बूआ क्या कहती हो, दाम मुझे देती हो ?

बूआ ने कहा : आज मदरसे तुम चले जाओ, मास्टर से कह देना :
पैसे आज नहीं मिले, कल तक मिल जायँगे

तब तक माँ आई उसने कहा : रोज-रोज़ कहती हूँ पढ़-लिख कर क्या होगा
पढ़ना अब बन्द करो इसका, घर काम करे, पढ़ना हमारे
नहीं सहता,पर बात मेरी कौन सुनता है
रान-परोसी कहते हैं, लड़का इन्हें भारी है, इसी राह खोरहे हैं

बूआने मुझसे कहा चिल्लाकर : जाओ तुम, नहीं तुम्हें देर होगी, सब चले
गये होंगे

लेकिन मैं बूआ के पीछे जा खड़ा हुआ, पूरी बात सुनना मैं चाहता था,
गया नहीं

बूआ ने कहा : धन्य बुद्धि, जो नहीं पढ़ते वे सब क्या अमर हैं ?

माँ ने कहा : देखते हुए मक्खी लीलते नहीं बनता पढ़ लिखकर ही आखिर
फ़लाने विद्वान हुए, पढ़ते-लिखते ही तीन-चार जने मरगये
तुमको तो जैसे कहीं पत्ता भी नहीं खड़का गिरते हुए थोड़ा भी

बूआने कहा : दुलहिन [माँ को वे यही कहा करती थीं] इस बच्चे को
मैंने बड़ी श्रद्धा से प्रेम से निष्ठा से विद्या को दान कर दिया है जान बूझकर
दान कैसे फेर लूँ, ऐसा कभी नहीं हुआ — विद्या माता ही अब इसको
निरखें-परखें
रक्षा और पालन-पोषण करें !

◆

धूप सुन्दर धूप में जग रूप सुन्दर

◆

धूप सुन्दर
धूप में
जग रूप सुन्दर
सहज सुन्दर

व्योम निर्मल
दृश्य जितना
स्पृश्य जितना
भूमि का वैभव
तरङ्गित रूप सुन्दर
सहज सुन्दर

तरुण हरियाली
निराली शान शोभा
लाल पीले
और नीले
वर्ण वर्ण प्रसून सुन्दर
धूप सुन्दर
धूप में जग रूप सुन्दर

ओस कण के
हार पहने
इन्द्र धनुषी
छवि बनाये
शस्य तृण
सर्वत्र सुन्दर
धूप सुन्दर
धूप में जग रूप सुन्दर

◆

ढल गया दिन धूप शीतल होगयी

◆

ढल गया दिन
धूप शीतल हो गई

धूप शीतल हो गई
कुछ रंग बदला
रूप बदला
भाव में
चल चेतना-सी खो गई
ढल गया दिन धूप शीतल हो गई

भूमि को मैं देखता हूँ
ध्यान से सम्मान से
कृषि- कला के फूल-फल से
हरित स्वर्ण अनूप वर्ण-तरंगवाली हो गई
ढल गया दिन धूप शीतल हो गई

आज निर्मल नील नभ के
चिर सुषम सम्पर्क से
पृथ्वी सुनहली स्वर्ण चम्पक
सुचर चर सस्वर सजीले
अचर नीरव-से रँगीले
नयन को देती निमन्त्रण
धन्य कण-कण को बनाकर
दिव्य सुन्दरता धरा पर आगई
पुतलियों में ज्योति स्वर्गिक हो गई
ढल गया दिन धूप शीतल हो गई

रूप में स्वर में
सुवर्ण तरंग आई
प्राप्त गति में प्रीति
जीवन में मधुर आसक्ति आई
ढल गया दिन धूप शीतल हो गई

◆

स्तब्ध नीरव रात

◆

चाँदनी-चर्चित
परम प्रार्थित
समर्पित
स्नेह-सी यह रात
स्तब्ध नीरव रात

क्षितिज है संकीर्ण
कुहरे से सघन अवरुद्ध
दिन जैसा नहीं विस्तीर्ण
वस्तुओं का रूप
अब तो और कुछ है
वस्तुओं का रंग
अब तो और कुछ है
मन्द तारे
चमचमाती
चाँदनी की रात
स्तब्ध नीरव रात

शान्त बिलकुल शान्त
चर अचर सब
मौन कितनी रात
स्तब्ध नीरव रात

◆

चम्पा काले काले अक्षर नहीं चीन्हती

•

चम्पा काले काले अक्षर नहीं चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आजाती है
खड़ी-खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है :
इन काले चिह्नों से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं

चम्पा सुन्दर की लड़की है
सुन्दर ग्वाला है : गायें-भैंसें रखता है
चम्पा चौपायों को लेकर
चरवाही करने जाती है
चम्पा अच्छी है
चंचल है
नटखट भी है
कभी-कभी ऊधम करती है
कभी-कभी वह क़लम चुरा देती है
जैसे-तैसे उसे ढूँढकर जब लाता हूँ
पाता हूँ—अब काग़ज़ ग़ायब
परेशान फिर होजाता हूँ

चम्पा कहती है :
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन-भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है ?
यह सुनकर मैं हँस देता हूँ
फिर चम्पा चुप हो जाती है

उस दिन चम्पा आई, मैंने कहा कि :
चम्पा, तुम भी पढ़ लो
हारे-गाढ़े काम सरेगा
गाँधी बाबा की इच्छा है—
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
चम्पा ने यह कहा कि :
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गांधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने-लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी

मैंने कहा कि चम्पा, पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा तुम गौने जाओगी
कुछ दिन बालम संग-साथ रह चला जायगा जब कलकत्ता
बड़ी दूर पर है कलकत्ता
कैसे उसे सँदेसा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी
चम्पा पढ़ लेना अच्छा है !
चम्पा बोली : तुम कितने झूठे हो, देखा,
राम, राम, तुम पढ़-लिख कर इतने झूठे हो
मैं तो ब्याह कभी न करूँगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मैं अपने बालम को संग-साथ रखूँगी
कलकत्ता मैं कभी न जाने दूँगी
कलकत्ते पर बज्र गिरे।

◆

सघन पीली ऊर्मियों में बोर

◆

सघन पीली
ऊर्मियों में
बोर
हरियाली
सलोनी
झूमती सरसों
प्रकम्पित वात से
अपरूप सुन्दर
धूप सुन्दर

मौन एकाकी
तरङ्गें देखता हूँ
देखता हूँ
यह अनिर्वचनीयता
बस देखता हूँ
सोचता हूँ
क्या कभी
मैं पा सकूँगा
इस तरह
इतना तरङ्गी
और निर्मल
आदमी का
रूप सुन्दर
धूप सुन्दर
धूप में जग रूप सुन्दर
सहज सुन्दर

◆

भस्मावृत लूकी-सा

◆

भस्मावृत लू की - सा
मैं इस अन्धकार में
पड़ा हुआ हूँ
अपनी चेतनता की ज्वाला में
परिसीमित
उठ कर

ऊपर अन्धकार से भरे हुए इस आसमान में
मैं निहारता
लूक टूटते
जैसे अन्धकार के गढ़ पर
ये प्रकाश के तीर छूटते
देख देख कर
मुझे ज्योति की जीवन की अनिवार्य विजय का
दृढ़ विश्वास प्राप्त होता है
इतने - इतने बलिदानों की
अकृत-कार्यता
सदा न सम्भव

जिन लोगों ने अन्धकार में
जीवन का उत्सर्ग किया है
कर एकत्र परम निष्ठा से
अपना प्राप्त प्रकाश दिया है
अन्धकार के क्षुद्र ग्रास से
जो झलके
वे सब महान् हैं
अपनी मनः शक्ति तत्परता के

अन्धकार में देख रहा हूँ
जीवन की बनती रेखाएँ
आयें बाधाएँ सब आयें
पर न मिटेंगी किसी काल में
ये बनने वाली रेखाएँ

◆

जिस समाज में तुम रहते हो

◆

जिस समाज में तुम रहते हो
यदि तुम उसकी एक शक्ति हो
जैसे सरिता की अगणित लहरों में
कोई एक लहर हो
तो अच्छा है

जिस समाज में तुम रहते हो
यदि तुम उसकी सदा सुनिश्चित
अनुपेक्षित आवश्यकता हो
जैसे किसी मशीन में लगे बहु कल-पुर्ज़ों में
कोई भी कल-पुर्ज़ा हो
तो अच्छा है

जिस समाज में तुम रहते हो
यदि उसकी करुणा ही करुणा
तुमको यह जीवन देती है
जैसे दुर्निवार निर्धनता
बिलकुल टूटा फूटा बर्तन घर किसान के रक्खे रहती
तो यह जीवन की भाषा में
तिरस्कार से पूर्ण मरण है

जिस समाज में तुम रहते हो
यदि तुम उसकी एक शक्ति हो

उसकी ललकारों में से ललकार एक हो
उसकी अमित भुजाओं में दो भुजा तुम्हारी
चरणों में दो चरण तुम्हारे
आँखों में दो आँख तुम्हारी
तो निश्चय समाज-जीवन के तुम प्रतीक हो
निश्चय हो जीवन चिर-जीवन

◆

स्वस्थ तन स्वस्थ मन हो

◆

स्वस्थ तन
स्वस्थ मन
हो
तो जीवन
जीवन

जिस तरह
आजकल
तन दुर्बल
उसी तरह
मन दुर्बल
दुर्बलता में नहीं
जीवन जीवन

पराधीन भारत में जन-जीवन
वारि मीन का जैसे प्राण-केश
कारण पर निर्जीवन अखिल देश
पर मुखापेक्षी मिट्टी जीवन

जहाँ लोग औरों के साधन हैं
प्राप्त भोग, चल कि अचल बस धन हैं
वहाँ नहीं जीवन चेतन-जीवन

◆

छाती पर चढ़ा हुआ

छाती पर चढ़ा हुआ अन्धकार का पहाड़ उतर गया
और यह प्रभात हुआ
कञ्चन बरसाता हुआ सुन्दर प्रभात हुआ
हलका हलका स्पर्श वायु का मिला
जैसे परदेसी आत्मीय का
सीमा में आने का प्रियतर सन्देश मिला

शय्या से जीवन का बल लेकर
श्रान्ति-क्लान्ति सब हर कर
उठा मैं नया ही उत्साह लेकर
दिन का प्रतीक्षाकुल चिर - वाञ्छित
गुलाबी सुनहला प्रकाश-पूर्ण
जैसे निमन्त्रण मिला
अद्वितीय मुझको आह्लाद हुआ
कञ्चन बरसाता हुआ सुन्दर प्रभात हुआ

खुले सब खिले सब
बन्ध तोड़ कर तम का आँखों में मिले सब
सबका अभीष्ट यह प्रभात—सुन्दर प्रभात हुआ

आजकल लड़ाई का ज़माना है

◆

आजकल लड़ाई का ज़माना है
घर, द्वार, राह और खेत में
अपढ़-सुपढ़ सभी लोग
लड़ाई की चर्चा करते रहते हैं

जिन्हें देश-काल का पता नहीं है
वे भी इस लड़ाई पर अपना मत रखते हैं
रूस, चीन, अमेरिका, इंगलैण्ड का
जर्मनी, जापान और इटली का
नाम लिया करते हैं
साथियों की आँखों में आँखें डाल डाल कर
पूछते हैं, क्या होगा ?

कभी यदि हवाई जहाज़ ऊपर से उड़ता हुआ जात
जबतक वह क्षितिज पार करके नहीं जाता है
तबतक सब लोग काम-धाम से अलग होकर
उसे देखा करते हैं

अण्डे, बच्चे, बूढ़े या जवान सभी
अपना-अपना अटकल लड़ाते हैं :
कौन जीत सकता है
कभी परेशान होकर कहते हैं :
आखिर यह लड़ाई क्यों होती है
इससे क्या मिलता है

हाथ पर हाथ धरे हिन्दुस्तान की जनता बैठी है
कभी-कभी सोचती है : देखो, राम या अल्लाह

किसके पल्ले बाँधते हैं हम सबको
हिन्दुस्तान ऐसा है
बस जैसा तैसा है

◆

भोरई केवट के घर

◆

भोरई केवट के घर
मैं गया हुआ था बहुत दिन पर

बाहर से बहुत दिनों बाद गाँव आया था
पहले का बसा गाँव उजड़ा सा पाया था

उससे बहुत-बहुत बातें हुईं
शायद कोई बात छूट नहीं सकी
इतनी बातें हुईं

भीतर की प्राणवायु सब बाहर निकाल कर
एक बात उसने कही
जीवन की पीड़ा भरी
बाबू, इस महँगी के मारे किसी तरह अब तो
और नहीं जिया जाता
और कबतक चलेगी लड़ाई यह ?

ऐसा जान पड़ा जैसे भोरई निरुपाय और असहाय
आकण्ठ दुःख के अभाव के समुद्र में पड़ा हुआ
उसकी विकट लहरों के सह रहा थपेड़े था

इस अकारण पीड़ा का भोरई उपचार कौनसा करता
वह तो इसे पूर्व जन्म का प्रसाद कहता था
राष्ट्रों के स्वार्थ और कूट नीति
पूँजी पतियों की चालें
वह समझे तो कैसे !

अनपढ़ देहाती, रेल-तार से बहुत दूर
हियाई का बाशिन्दा
वह भोरई

◆

एकाधिकार के पंजे में

◆

ए का धि का र के पञ्जे में
जीवन के सारे व्यापार
धीरे-धीरे अब
समाते चले जा रहे हैं
जैसे जैसे लड़ाई का वेग, बल और दिन
बढ़ता चला जाता है
वैसे वैसे एकाधिकार भी धरातल पर
बढ़ता चला जाता है
अधिकाधिक संख्या में लोग इधर आये दिन
सर्वहारा होते चले जा रहे हैं
और पूँजी खींच खींच करके सब दुनिया की
मुट्ठी-भर पूँजीपति पहले से अधिक मोटे
होते चले जा रहे हैं

यह क्रम रुकेगा नहीं शोषण थम सकेगा नहीं
जब तक चढ़ा-ऊपरी का राज्य है
तब तक यह मनुष्य-जीवन फूल-फल सकेगा नहीं
पूँजीवाद जिस डाल पर बैठता है
वही डाल काटता है, सर्वनाश करता है स्वयमेव
अतुलित धन-राशि पर
साँप के समान जब कुछ पूँजीपति
अपने विष-बल का आतङ्क फैलाते हुए
शेष रह जायँगे
तब जनता उनसे उस धन का उद्धार करके
जीवन के नये भवन
नि र्मा ण क रे गी

◆

इन दिनों मनुष्य का महत्त्व कोई नहीं है

◆

इन दिनों मनुष्य का महत्त्व कोई नहीं है
मूल्य गिर गया है अब मनुष्य का
सिन्धु में बिन्दु का जो स्थान है
वह भी स्थान नहीं है मनुष्य का

ऐसा क्यों

पूँजीवाद का इतिहास कहता है
साम्राज्यवाद घोषित करता है
कुल का अभिमान और सुख-संग्रह
करने का वैयक्तिक उत्साह इसका उत्तेजक है
कोई सम्बन्ध-मर्म कहीं नहीं
अलग अलग सब अपने सुख दुख में बहते हैं
और जो प्रहार उन पर होते हैं सहते है

पूँजीवाद ने महत्त्व नष्ट कर दिया सबका
जीवन का, जन का, समाज का, कला का
बिना पूँजीवाद को मिटाये किसी तरह भी
यह जीवन स्वस्थ नहीं हो सकता
ज्ञान-विज्ञान से किसी प्रकार
कोई कल्याण नहीं हो सकता

◆

प्रखर शिशिर की वायु लहराती

◆

हर कर तरुओं की नीरवता
हर कर चिर अभिशप्त अचलता
भर कर प्राण-मयी चञ्चलता
देकर निज स्वर
अतिशय सुन्दर
अग जगको कर
प्रखर शिशिर की वायु ल ह रा ती

शस्य लता तरु के चुन चुन कर
पात पुराने गिरा गिरा कर
करती सुन्दर और मनोहर
सजकर आती
प्रिय वसन्त के
गीत सु ना ती
प्रखर शिशिर की वायु ल ह रा ती

मेघों को संचालित करती
उनके गर्जन का स्वर हरती
भू के कर्ण-रन्ध्र में भरती
वर्षा करती
विद्युत द्युति का
अञ्जन करती
प्रखर शिशिर की वायु ल ह रा ती

परिवर्तन, सन्देश सुनाती
गति के गीत प्रगति से गाती
नूतन सृजन साथ ले आती

नया नया मन
नयी लहर का
चेतन जीवन
प्रखर शिशिर की वायु ल ह रा ती

◆

प्रिय प्रभात तुम आये आये

◆

प्रिय प्रभात तुम आये - आये
नित्य मनोहर नूतन नूतन

चिर सहचर तुम आये-आये
तुमने एकाकीपन हर कर
नयी तरङ्ग हृदय में भरकर
मिला दिया जन से जीवन को
स्मिति का मधु आकर्षण भरकर
निर्जीवन का जीवन, जीवन
का अमृत तुम लाये - लाये

तुम आश्वासन बनकर आये
नयनों में प्रकाश बन आये
रूप-रूप में तुम लहराये
सुन्दरता को सङ्ग लगाये
अपनी प्राण-प्रभा से जड़ में
चेतन में तुम छाये छाये

दृग में स्वर्णाञ्जन से लगकर
दृश्य-दृश्य में झलके जगकर
आये सजकर सबको सजकर
तुम सुन्दरता का लहराता
सिन्धु सङ्ग में लाये-लाये

स्वागत, स्वागत, सखे तुम्हारा
चिर स्वागत है सखे तुम्हारा
कितना रङ्ग-रूप देता है
जीवन को चिर स्नेह तुम्हारा
स्निग्ध सुवर्ण अरुण जीवन के
विजय-रूप तुम आये आये

◆

सन्ध्या के मौन में

◆

सन्ध्या के मौन में
स्वर
दिवाचर के निशाचर के
स्थलचर के जलचर के नभचर के
एक पल को जा समाये
सन्ध्या के मौन में स्वर

जब प्रतीची के क्षितिज के वदन-मण्डल पर
गुलाबी स्निग्ध मधु-मुसकान आई
वशीकरण-प्रवीण-मधु-मुस्कान आई
खो गये भव चेतना स्वर नयन का रूप धर कर
खो ग ये
सन्ध्या के मौ न में स्व र

सबने अपना-अपना दिन देखा
एक-एक चित्र एक-एक रेखा
सबने देखा समझा फिर देखा
फिर स्थल पर
अवनत शिर
पथ पर प्रति अंक देखते हुए
जन-जन ने आगामी कल का सौन्दर्य देखा
मन-मन में क्षण-क्षण की रूप-कल्पना करके पहुँचे घर
खोगये सन्ध्या के मौन में स्वर

◆

तुम्हें प्रभात पुकार रहा है राही !

तुम हरदम के चलने वाले
सम्मुख तमी अपार देखकर
तुमने अस्त्र - शस्त्र निज डाले
कमल - समान बन्द हो गये
सान्ध्य - समीर - लहर से कँपकर
किरण-करों से मधुर स्पर्श कर
देश दिखा कर मार्ग दिखा कर
जगा - जगा कर
तुम्हें प्रभात पुकार रहा है राही !

तुमने घर छोड़ा पुर छोड़ा
पुरजन छोड़े परिजन छोड़े
सुख - सुविधाओं से मुख मोड़ा
अपने प्रेय ध्येय पर बलि हो
ममता के सब बन्धन तोड़े
सहज प्राप्त आश्वासन छोड़े
निखिल वृत्तियों का बल जोड़े
पथ पर आये
तुम्हें प्रभात पुकार रहा है राही !

स्नेह-नम्र यह तरु की छाया
तुमने जिसके नीचे बस कर
रात बिताई स्वप्न सजाया
स्वप्नों को चरितार्थ करो अब
आगे बढ़ो कमर को कसकर
तन - मन देकर
तुम्हें प्रभात पुकार रहा है राही !

अब अदृष्ट का जाल कट गया
यह सुवर्ण अवसर आया है
अन्धकार का गर्त्त पट गया
मनोकामना सा पाया है
तुमने जो प्रकाश आया है
यह अलभ्य सहचर आया है !
प्रिय आया है
तुम्हें प्रभात पुकार रहा है राही !

◆

अगर हारकर विचलित होकर तुम उद्यम को छोड़ न बैठे

◆

अगर हार कर विचलित होकर तुम उद्यम को छोड़ न बैठे
यह जीवन है, इसे जीवनी-शक्ति कहा करती है दुनिया
बाधाएँ तो पथ का धन हैं

बन्धु, पराजय भी मिलती है किसी वीर को समर भूमि में
उद्योगी को जीवन में क्षण क्षण प्रयोग करना पड़ता है
गिर गिर कर उठना पड़ता है उठ उठकर चलना पड़ता है

तुम्हें तुम्हारी साँसें ही आने - जाने का अर्थ बतातीं
पूर्ण चेतना से जीवन का सञ्जीवन प्रिय मन्त्र सिखातीं
सङ्ग साँस के चलते चलते, हाथ चलाकर, पैर चला कर
अपने प्रेय श्रेय तक, प्रिय हे, बढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ

तन तो मन का एक यन्त्र है
सिद्धि - सफलता, मनः शक्ति के उद्बोधन का मूल मन्त्र है
तुम मन को निर्बल न बनाओ, हारो तो मत उसे हराओ
गिर कर स्वयं उसे न गिराओ
उसे उठाओ सबल बनाओ
मन से ही सञ्चालित जग के निखिल तन्त्र हैं

◆

लौटने का नाम मत लो

◆

चल रहे हो तो चलो
विश्राम का भी नाम मत लो
साँस चलती है अगर रुक जाय
तो बस मौत आयी
ज़िन्दगी की सौत समझो मौत आयी
साँस से चलते रहो प्रिय
ठहरने का नाम मत लो
लौटने का नाम मत लो

तुम ठहरते हो, समय कब है ठहरता
सतत चलता, नहीं रुकता, नहीं रुकता
सतत चलता
गति - विमुख होकर कभी
विश्राम का प्रिय नाम मत लो
लौटने का नाम मत लो

तुम अगर पिछड़े, सदा पिछड़े रहोगे
फिर न बढ़ते हुए अपने साथियों को
पा सकोगे, चल थकोगे
प्रिय अकेले बैठ रहने का
किसी क्षण नाम मत लो
लौटने का नाम मत लो

जिस लहर में हो समय की वह न छोड़ो
ज़ोर तन - मन का लगा कर
वह न छोड़ो, वह न छोड़ो
सकल ममता - सूत्र तोड़ो

प्रिय अलग होकर कभी
आराम का भी नाम मत लो
लौटने का नाम मत लो

विजय होगी, तुम अगर चलते रहे तो
विजय होगी, तुम अगर बढ़ते रहे तो
निरन्तर बढ़ते रहो
अलग होकर कर्म-पथ से
प्रिय, विजय का नाम मत लो
लौटने का नाम मत लो

◆

मैं सगर्व सोल्लास निरन्तर उन लोगों का गुण गाता हूँ

◆

जो अपनी धुन पर न्यौछावर अपना सब कुछ कर देते हैं
जग-जीवन के लिए स्वयं को निर्भय हो बलि कर देते हैं
जिनका क़दम क़दम जीवन की जय यात्रा का प्रिय प्रतीक है
मैं सगर्व सोल्लास निरन्तर उन लोगों का गुण गाता हूँ

जिनका स्वर जीवन का स्वर है जन जन को हर्षाने वाला
जन जन की चेतना जगा कर जग-जीवन समझाने वाला
जीवन का प्रताप जिनके प्रत्येक कार्य से सन्दीपित है
मैं सगर्व सोल्लास निरन्तर उन लोगों का गुण गाता हूँ

जिन लोगों ने संघर्षों में कभी हार को हार न माना
मरते रहे परन्तु जिन्होंने मृत्यु-प्रहार प्रहार न माना
जिनके अप्रतिहत साहस की क्षण क्षण लिखते रहे कहानी
मैं सगर्व - सोल्लास निरन्तर उन लोगों का गुण गाता हूँ

जिन लोगों ने जीवित रहते कभी न अत्याचार सहा है
अत्याचार से नहीं जिनका रञ्चमात्र सम्बन्ध रहा है
जिनका तेज तेज औरों का बन्धु - भाव से रहा बढ़ाता
मैं सगर्व सोल्लास निरन्तर उन लोगों का गुण गाता हूँ

◆

मौत यदि रुकती नहीं तो जन्म भी रुकता कहाँ है

◆

मौत यदि रुकती नहीं तो
जन्म भी रुकता कहाँ है

एक क्षण यदि और है तो
दूसरा क्षण और कुछ है
रूप पल पल पर बदल कर
और कुछ है और कुछ है
यह अखण्ड विधान जग में
रञ्च भी झुकता कहाँ है

यदि तुम्हारे वक्ष में है साँस
बाँहों में भरा है बल
काल-सरिता की लहर पर
आँक दो गति-चित्र निर्मल
सिन्धु समझो बिन्दु पर वह
बिन्दु में चुकता कहाँ है

दुःख केवल दुःख ही यदि
सत्य है तो और क्या है
अश्रु सिञ्चित हास पुलकित
जिन्दगी फिर और क्या है
ज़िन्दगी का मोल केवल
मौन से चुकता कहाँ है

◆

तुमने मुझे पुकारा

तुमने मुझे पुकारा
प्रिय प्रभात ओ
तुमने मुझे पुकारा

अन्धकार में खोया था
सोया था
अपनी हारों को निहार कर
विचलित हो कर
शे प श क्ति को
शे प श्वा स को
निरख रहा था
परख रहा था
इस जीवन को समझ रहा था
तब तक आकर
अमृतमयी स्मिति से मुसकाकर
तुमने मुझे पुकारा
प्रिय प्रभात ओ, तुमने मुझे पुकारा

अन्धकार से अपने कर से तुमने मुझे निकाला
नूतन जीवन डाला
किया प्रकाशित विश्व भुवन को
मेरे मन को
नयनों को बल दिया कण्ठ को वाणी
कर्म-तरङ्गित हुए प्रफुल्लित प्राणी प्राणी
एक एक क्षण एक एक कण
मधुर ज्योति के सागर में लहराये
जीवन के स्वर

सङ्घर्षों के अप्रतिहत स्वर
विजय-पराजय के स्वर
जग-जीवन के
धरती से उठ-उठ कर सारे आसमान में छाये
सब के साथ समान स्नेह से तुमने मुझे पुकारा
प्रिय प्रभात ओ, तुमने मुझे पुकारा

◆

क्या तुम्हें होगा कभी विश्वास

◆

क्या तुम्हें होगा कभी विश्वास,
प्रिय विश्वास !

नयन में मन में रमे प्रिय
स्वप्न में सुन्दर सजे प्रिय
चेतना में लीन
क्षण-क्षण के मनोहर श्वास

बन गया बन्दी तुम्हारा
प्राण जीवन, मान सारा
शेष प्राण-प्रवाह
निर्जन शून्य के आश्वास !

क्षार बन उड़ते क्षणों को
स्वर्ण-जीवन के कणों को
देखता हूँ दूर
मेरा बन गया अभ्यास !

सौंप दी ममता हृदय की
प्रिय लहर पाकर समय की
बन गये तुम एक—
तुम मन के मधुर आवास

आ रहे क्षण जा रहे क्षण
अब न उनमें चेतना-कण
मैं तुम्हें देखूँ कि
देखूँ विश्व का मधुमास

◆

सन्ध्या बादलोंवाली यह आयी

◆

सन्ध्या बादलोंवाली यह आयी

डूब गया दिन
दिन का कोलाहल
चित्र वे स जी ले
भावमय सम्बल
जिन्हें खो ज ती
शत-शत नयनों से
यह संसृति
अ कु ला यी
सन्ध्या बादलोंवाली
यह आयी

अलग हुए जन तन-मन में अपने
दृग में साकार हुए प्रिय सपने
ज्योति चेतना में हुई ए का का र
कल्पो की निधि लघु क्षण में आयी
सन्ध्या बादलोंवाली
यह आयी

◆

नीम में नव फूल आये

◆

(१)

नीम में नव फूल आये
सुरभिमय वातास !

मधुर मञ्जरियाँ तरङ्गित
कर रहीं मधु मौन इङ्गित
भर रहा ऋतुराज में प्रतिश्वास में विश्वास
सुरभिमय वातास !

(२)

नवल किसलय नवल गति लय
नवल वय का नवल परिचय
हरित - रक्तिम रङ्ग सुन्दर लहर लेता हास
सुरभिमय वातास !

(३)

गन्ध गुञ्जित पवन प्रति पल
लहर चञ्चल हृदय चञ्चल
बस गयी मन में नयन में रूप की प्रिय प्यास
सुरभिमय वातास !

◆

मरण-सेज तज कर प्रिय, रण में फिर आया

◆

(१)

जीवन प्रिय से प्रियतर
महामहिम अमृत स्वर
क्षण प्रति क्षण सुन्दरतर
जीवन - आलिङ्गन में बँधकर फिर आया

(२)

गयी दूर निर्बलता
गयी दूर व्याकुलता
अब मैं पथ पर चलता
चलता चलता अविरत पग पग फिर आया

(३)

वे जन जो पास न थे
वे स्वर जो पास न थे
पास पास, पास न थे
उनके मैं पास साँस पाकर फिर आया

(४)

प्रति दिन उल्लास और
प्रति दिन विश्वास और
प्रति दिन सङ्घर्ष और
जीवन की लहरों में प्रिय, मैं फिर आया

◆

बढ़ अकेला

◆

बढ़ अकेला
यदि न कोई सङ्ग तेरे पन्थ-बेला
बढ़ अकेला

चरण ये तेरे रुके ही यदि रहेंगे
देखने वाले तुझे कह क्या कहेंगे
हो न कुण्ठित हो न स्तम्भित
यह मधुर अभियान-बेला
बढ़ अकेला

श्वास ये सङ्गी तरङ्गी क्षण प्रतिक्षण
और प्रति पदचिह्न परिचित पन्थ के कण
शून्य का शृङ्गार तू
उपहार तू किस काम मेला
बढ़ अकेला

विश्व-जीवन मूक दिन का प्राणमय स्वर
सान्द्र पर्वत - शृङ्ग पर अभिराम निर्झर
सफल जीवन जो जगत के
खेल भर उल्लास खेला
बढ़ अकेला

◆

उजले उजले बादल आकाश में

◆

(१)

उजले उजले बादल आकाश में
दस बजे दिन के प्रकाश में

आते हैं, आगे बढ़ जाते हैं
जाते जाते कुछ कह जाते हैं

(२)

हवालात के आगे राह है
लोगों के लक्ष्य का प्रवाह है

लोग व्यस्त आते हैं जाते हैं
चन्द क़दम दिखकर छिप जाते हैं

(३)

स्वतंत्रता का कितना मान है
मुझको अब इसका अनुमान है

सामने, वह, पिंजरे में तोता है
उसे देख दर्द आज होता है

◆

मुझे तुम्हारी याद आती

◆

(१)

नदी किनारे सन्ध्या बेला
खोया-सा मैं कहीं अकेला
रहता हूँ तब हवा साँझ की
दे दे कुछ अवसाद जाती
मुझे तुम्हारी याद आती

(२)

धीरे धीरे सन्ध्या तारा
आता एकाकी कुछ हारा
मेरे मन में उसकी वह छवि
भर-भर और विषाद जाती
मुझे तुम्हारी याद आती

(३)

बढ़ने लगता और अंधेरा
अन्धकार का पड़ता घेरा
तम की कारा इन नयनों में
पावस का उन्माद लाती
मुझे तुम्हारी याद आती

◆

युग गये जो बीत

◆

(१)

युग गये जो बीत, उनका मौन प्राणों में गया भर
वे किसी क्षण के मनोहर चित्र ,सुन्दर भाव, वे स्वर
धूप - छाया में तरङ्गित बढ़ रहे थे जो निरन्तर
वे गये आखिर किधर क्या था कहीं कुछ और सुन्दर

(२)

अब न जीवन - भूमि पर उनका कहीं है चिह्न कोई
अब न साक्षात्कार सम्भव है न उनका चिह्न कोई
उन युगों के सखा - सहचर चल दिये जग में न कोई
जलद - विद्युत् वे तरुण - तरुणी नहीं हैं आज कोई

(३)

वे पुराने लोग, भू, पर्वत, नगर, वे ग्राम, वे वन
वे समस्याएँ पुरानी और जीवन और वे जन
वे तरङ्गों से मुखर दिन रात जन - पद और कानन
किम्वदन्ती, स्मृति - कथा बन भोगते हैं शेष जीवन

◆

हंस के समान दिन उड़कर चला गया
अभी उड़कर चला गया

◆

हंस के समान दिन उड़कर चला गया
अभी उड़कर चला गया

पृथ्वी आकाश
डूबे स्वर्ण की तरङ्गों में
गूँजे स्वर
ध्यान हरण मन की उमङ्गों में
बन्दी कर मन को वह खग चला गया
अभी उड़कर चला गया

कोयल सी श्यामा सी
रात निविड़ मौन पास
आयी जैसे बँधकर
बिखर रहा शिशिर श्वास
प्रिय सङ्गी मन का वह खग चला गया
अभी उड़कर चला गया

◆

दिवस की ज्योति हुई सरसों के फूल सी
सरसों के फूल सी

◆

दिवस की ज्योति हुई सरसों के फूल-सी
सरसों के फूल-सी

लहराया ज्वार में
धरती से आ स मा न
एक रङ्ग
भिन्न रूप
धरती से आसमान
सुन्दरता छायी है सरसों के फूल - सी
सरसों के फूल - सी

सञ्चित आनन्द उड़ा
गीतों के पर खोले
लहरों - सा
खेल रहा
गीतों के पर खोले
यह श्री झर जायेगी सरसों के फूल-सी
सरसों के फूल-सी

◆

कूक रही है कोयल बार-बार

•

हरी हरी डाल पर
लाल लाल फूलों से
लदी हुई झुकी हुई
पतली सी डाल पर
कूक रही है कोयल
बार बार

एक साल बाद फिर
वसन्त आ रहा है घर
झर रहे पुराने पात
नूतन किस लय आये
भर रहीं लताएँ फूल
रङ्ग रङ्ग के सुन्दर
नये गीत नये स्वर
जैसे निर्मल निर्झर
कूक रही है कोयल
बार बार

मन का दिन आया है
रङ्ग यह तरङ्ग यह
सजाव यह सिंगार यह
जल, स्थल, आकाश में
समान भाव एक तार
अलङ्कार छाया है
प्राणों का एक स्वर
प्राणों का एक गीत

प्राणों की एक ही पुकार
कूक रही है कोयल
बार बार

◆

भीतर से जितनी साँसें बाहर आती हैं

◆

भीतर से जितनी साँसें बाहर आती हैं
वे अपने शक्ति-पूर्ण अस्तित्व को ही
उद्घोषित करती हैं

अपनी गति अपना बल चरणों को देती हैं
अपनी बिजली का प्रकाश आँखों को देकर
और लौटकर
इतस्ततः जो बिखरी हुई अदृश्यमान हैं
सञ्जीवनी-शक्ति प्राणों में भर देती हैं

अतः साँस रहते अपने को या जीवन को
दुर्बल, निर्मल, व्यर्थ समझना कभी किसी क्षण ठीक नहीं है
किसी प्रकार किसी आशय से
श्वास और निःश्वास देह की
दुर्बलता-निर्बलता हर कर
नयी शक्ति नव बल देते हैं
स्वतः प्रचुरतर

श्वासों से सम्बन्ध बना है जग से, जीवन से,
समाज से, अखिल विश्व से क्षण प्रतिक्षण में
उन श्वासो को व्यर्थ समझ कर
अपने को एकाकी रखना
तन तक सीमित रखना मन को

केवल स्व की चिन्ता करना
निश्चय आत्महनन करना है

श्वासों से सम्बन्ध विश्व से बना हुआ है
विश्व श्वास के एक एक कम्पन में होता
सूक्ष्म लहर-सा प्राण-रूप औ' शक्ति-प्रवाही
यह सुंदर सम्बन्ध सचेतन संज्ञाकारी
मन पर छा जानेवाला एकान्त अचेतन
औ' अनिष्टकर हर लेता

◆

घर बाहर देश में विदेश में

◆

घर बाहर देश में विदेश में
वायु बार बार अङ्ग अङ्ग से
जननी-सी प्यार से दुलार से
स्पर्श किया करती है

कितना ही सङ्ग-साथ छोड़ कर
मैं एकान्त-सेवन करने चलूँ
किन्तु वायु जननी-सी स्नेहमयी प्राणमयी
सौ सौ शीतल कोमल लहरों से छू छू कर
कहती-सी है जैसे मौन मधुर
तुम सबसे रूठ, कहो कहाँ चले ?

देखता हूँ मैं अपलक आँखों से
वही वायु पेड़ों को, पौधों को,
घासों को, नदियों को, नालों को,
सरोवरों को, उठे पहाड़ों को,
पशुओं को, पक्षियों को, चराचर को,
आसमानवाले उन बादलों को

सर्वदा समान भाव से प्रतिदिन
प्रेमपूर्ण स्पर्श किया करती है
उतना ही प्यार किया करती है
मुझे उत्तरङ्ग जितना करती है
दुनिया की उत्तमता लिये हुए स्नेहमयी
वायु सदा जीवन का, शक्ति का, उमङ्ग का,
लघु-गुरु को, हीन या महान् को
स्नेह से वरदान दिया करती है

जो समानता यह वायु सर्वदा दिखलाती है
जीवन के पावन अधिकारों की सदा सजग
सब के लिए एक दृष्टि से रक्षा करती है
क्या मनुष्य उस समानता को अङ्गीकार कर
पूर्ण चेतन, पूर्ण जीवित, उत्तरदायित्वपूर्ण
कभी हो सकेगा इस विश्व में समान प्रिय
सभी के लिए नितान्त आवश्यक

◆

उठ किसान ओ

◆

उठ किसान ओ, उठ किसान ओ,
बादल घिर आये हैं
तेरे हरे भरे सावन के
साथी ये आये हैं

आसमान भर गया देख तो
इधर देख तो उधर देख तो
नाच रहे हैं उमँड़-घुमँड़ कर
काले बादल तनिक देख तो
तेरे प्राणों में भरने को
नये राग लाये हैं

यह सन्देशा लेकर आयी
सरस मधुर शीतल पुरवाई
तेरे लिए, अकेले तेरे
लिए, कहाँ से चल कर आयी

फिर वे परदेसी पाहुन, सुन,
तेरे घर आये हैं

उड़नेवाले काले जलधर
नाच नाच कर गरज गरज कर
ओढ़ फुहारों की सित चादर
देख उतरते हैं धरती पर

छिपे खेत में, आँख मिचौनी-
सी करते आये हैं

हरा खेत जब लहरायेगा
हरी पताका फहरायेगा
छिपा हुआ बादल तब उसमें
रूप बदल कर मुसकायेगा

तेरे सपनों के ये मीठे
गीत आज छाये हैं

◆

आज मेरे प्राण का स्वर

◆

आज मेरे प्राण का स्वर
भूमि-अम्बर में गया भर

देखता हूँ अब जिधर
कुछ और सुन्दर
सहज जीवन का सखा
कुछ और श्रीधर

इन क्षणों का राग यह
अनुराग यह कितना मनोहर

आज ममता आप
उमड़ी आ रही है
आज मन की कोकिला
कुछ गा रही है

आज चुपके से किसीने
क्या हृदय को कुछ दिया कर

ज्योति छायी उमँड़ जैसे
प्रा ण छा ये
रा त आ यी न हीं
घिर कर प्राण छाये

रहा वसुधा पर बरसता
घिर घुमँड़ कर स्नेह-जलधर

◆